सागर के सोप

हमारा अनुपम काव्य-साहित्य

आँखों में	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	२.५०
रूप-दर्शन (सचित्र पुरस्कृत)	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	६.००
वन्दना के बोल (पुरस्कृत)	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	२.५०
बलिपथ के गीत (पुरस्कृत)	जगन्नाथ प्रसाद 'मिलिन्द'	४.००
रावण महाकाव्य (पुरस्कृत)	हरदयालुसिंह वर्मा	६.००
गीत-गोविन्द (सचित्र पुरस्कृत)	विनयमोहन शर्मा	६.००
काव्य-धारा	डॉ० इन्द्रनाथ मदान	३.५०
[illegible]	देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'	१ २५
काव्य-धारा (संकलन)	सं० शिवदानसिंह चौहान-गोपालकृष्ण कौल	६.००
प्रथम सुमन	सत्यवती शर्मा	१.००
कदम-कदम बढ़ाए जा (खण्ड-काव्य)	गोपालप्रसाद व्यास	१.५०
अजी सुनो ! (सचित्र हास्य कविताएं)	गोपालप्रसाद व्यास	५ ००
अमृतप्रभा (खण्ड-काव्य)	राजेश्वरप्रसाद नारायणसिंह	०.६२
राधा-कृष्ण (सचित्र)	राजेश्वरप्रसाद नारायणसिंह	२.५०
संकलिता (सचित्र)	राजेश्वरप्रसाद नारायणसिंह	२.५०
जिप्सी (पुश्किन) (सचित्र)	अनुवादक—वीर राजेन्द्र ऋषि	२.००
चँदेरी का जौहर (सचित्र पुरस्कृत खण्ड-काव्य)	आनन्द मिश्र	२.००
दमयन्ती (पुरस्कृत महाकाव्य)	ताराचन्द्र हारीत	८.००
नारी (पुरस्कृत महाकाव्य)	अतुलकृष्ण गोस्वामी	१०.००
दस्ते-सबा (उर्दू शायरी)	फ़ैज़ अहमद 'फ़ैज़'	२.५०
दर्द दिया है (पुरस्कृत)	'नीरज'	४ ५०
प्राण-गीत	'नीरज'	३.००
बादर बरस गयो	'नीरज'	३.००
आसावरी (सचित्र)	'नीरज'	३.००
दो गीत	'नीरज'	२.००
नदी किनारे···	'नीरज'	३.००
···लहर पुकारे	'नीरज'	२.५०
धरती के बोल (सचित्र)	जयनाथ 'नलिन'	३.५०
मंथन	मुनि बुद्धमल	२.००
सागर के सीप (सचित्र)	भारत भूषण	३.५०
मेरे गीत	ललित गोस्वामी	२.००

आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-६

सागर के सीप

•

भारत भूषण

आत्माराम एण्ड संस, काश्मीरी गेट, दिल्ली - ६

'शरद् की उस निर्मल चाँदनी को जो मेरे
टूटे हुए छाजन से आकर मेरी छाती भिगो गई।'

—भारत भूषण

प्रकाशक
रामलाल पुरी, संचालक
आत्माराम एण्ड संस
काश्मीरी गेट, दिल्ली-६

मूल्य	:	तीन रुपये आठ आने
प्रथम संस्करण	:	जुलाई, १९५८
चित्रकार	:	योगेन्द्रकुमार 'लल्ला'
मुद्रक	:	मूवीज़ प्रेस, दिल्ली-६

अपनी बात

मेले में, अकेले में, गुंजान में अथवा वीरान में जब जब भी मन की बेचैनी शब्दों के अधर और गीतों की वाणी लेकर कुछ बोली है, वह सब, जैसा और जो कुछ भी है इस 'सागर के सीप' के रूप में आज आपके हाथों में सौंप रहा हूँ और इस आत्मविश्वास के साथ कि आपके मन की किसी न किसी कोमल पर्त्त को ये गीत अवश्य छू लेंगे।

जीवन-महाकाव्य के अठाईसवें सर्ग तक जो कुछ देखा, पढ़ा और गुना वह सब आत्मसात् होता गया, फिर उससे जो कुछ उगा यह मेरा अपना है, इस पर मेरे प्राणों की मोहर है। मनुष्य के आँसू कविता बनते हैं परन्तु जब कविता का मन भी उदास हो जाए, वह क्षण गीत के जन्म का क्षण होता है। इसीलिए गीत, सृष्टि भर में, सबसे अधिक कोमल और नाजुक है। मेरे गीतों का जन्म कब और कैसे हुआ, य मुझे स्मरण नहीं, बस इतना ही याद है कि—

"जब नींद न आई और न जाग सका,
बेचैनी की कुछ दवा न माँग सका,
दम घुटा, नयन का कोना गरम हुआ
तब तब मेरे गीतों का जनम हुआ।"

माँ भारती के इस चिर वासंती बयार में झूमते हुए उद्यान में आज अनगिनती रंग-बिरंगे फूल महक रहे हैं। किसी में गुलाब का लावण्य है तो किसी में सूरजमुखी का ओज, किसी में चम्पे का माधुर्य्य तो किसी में बेले की मादकता, और इन सभी की गन्ध गमक का जादू आज प्रत्येक भाषा-भाषी को पुलकित और उल्लसित कर उसे एक अलौकिक आनन्द और असीम सुख की अनुभूति करा रहा है। मैं तो यह सोच कर ही पुलक उठता हूँ कि इतने विशाल उद्यान में किसी पूरे उगे पौधे की जड़ के पास, धरती से केवल दो अँगुल की ऊँचाई पर, एक दुबली-पतली टहनी से चिपटा, आँखें मलता, अपने प्राणों में सौरभ और विकास जगने की कल्पना के सुख में विभोर तथा मातृ-मन्दिर की पूजा में जाने के सुख-स्वप्न में सोया, एक नन्हा सा अंकुर मैं भी हूँ। खिलकर पूजा की थाली में, या हार में गुँथकर मन्दिर तक पहुँच जाऊंगा अथवा यहीं मुरझाकर धूल बन जाऊँगा, यह भविष्य जाने।

'सागर के सीप' मेरा अपनी मातृ-भाषा के प्रति असीम अनुराग और प्रेम का प्रतीक है जो मुझे अपनी स्वर्गता माँ के प्राण-कोष से धरोहर के रूप में मिला है। आज तक मैंने इन गीतों को प्यार और दुलार दिया है और अब ये आपके पास आ रहे हैं।

अन्त में मैं अपने उन 'अपनों' के प्रति आभार प्रकट करता हूँ जिनके कारण ये गीत संग्रह का रूप ले सके हैं। चित्रकार श्री योगेन्द्रकुमार 'लल्ला' को क्या कहूँ, यहाँ मेरी लेखनी मौन है और जहाँ लेखनी भी मौन हो जाए उस अनुभूति की कल्पना पाठक स्वयं कर लें। वह एक सफल चित्रकार होने के साथ ही सफल कवि भी हैं, इसलिए इस संग्रह की कविताओं के मर्म तक पहुँचकर उन्हें चित्रित करने में उन्होंने अपनी कुशलता का परिचय दिया है। उनके इस अपनत्व का आभारी हूँ।

ब्रह्मपुरी, मेरठ —भारत भूषण

क्रम

सागर के सीप···



ये उर-सागर के सीप तुम्हें देता हूँ !
ये उजले-उजले सीप तुम्हें देता हूँ !

है दर्द-कीट ने युग-युग इन्हें बनाया !
आँसू के खारी पानी से नहलाया !
जब रह न सके ये मौन, स्वयं तिर आये !
भव-तट पर काल-तरङ्गों ने बिखराये !
है आँख किसी की खुली किसी की सोती !
खोजो, पा ही जाओगे कोई मोती !

ये उर-सागर के सीप तुम्हें देता हूँ !
ये उजले-उजले सीप तुम्हें देता हूँ !

बढ़ चल मेरी चाह…



बढ़ चल मेरी चाह पिया की नगरी चार क़दम !

चाँद खिलौना पहली पहली गिरती-पड़ती चाल,
गाल ढालते हों जब चुंबन की स्वतंत्र टकसाल !
अपने और पराये की जब हो न तनिक पहचान,
दुनिया लगे पहेली तुमको, जगत कहे नादान !
जब आँसू मुसकानों का शशि-मुख पर हो संगम,
शैशव की चंचल घड़ियों में बढ़ चलना उस दम !

जब आँखों से टकराकर आँखें मूच्छित हो जायँ,
किन्तु दुबारा फिर टकराने को बरबस ललचायँ !
जग भर का यौवन समेटने को फड़कें भुज मूल,
जब अधरों को प्रीत-निमंत्रण दें अधरों के कूल !
जब गालों पर अँगड़ाई लें उषा और पूनम,
बढ़ चलना तुम मस्त बजाती यौवन की सरगम !

जब नीरस हो जाय सरस, सरिता रह जाये रेत,
पकी फ़सल कट जाय रुपहली, उजड़े जीवन-खेत !
जब गीतों की जगह होठ से निकलें नित उपदेश,
रङ्ग कफ़न का ले सिर पर उड़ते हों उजले केश !
जब मुरझाई पलक-पँखुरियों में घुल जाये तम,
जीवन की संध्या-बेला में बढ़ चलना थम थम !

जब मुँद जाये सृष्टि नयन में, खिंचे प्राण की डोर,
बाहर आने को हो जब साँसों का अंतिम छोर !
तन-पिंजरे के अस्थि-सींखचे टूट टूट गिर जायँ,
तोड़ शिराओं के बन्धन जब प्राण अधर पर आयँ !
जब प्रियतम के द्वारे गिर जाये शरीर बे-दम,
तब निर्भय हो बढ़ जाना तुम केवल एक क़दम !

बढ़ चल मेरी चाह पिया की नगरी चार क़दम !

न इतने पास आ जाना...



न इतने पास आ जाना मिलन भी भार हो जाये,
न इतने दूर हो जाना कि जीवन भर न मिल पाऊँ !

कहो तुम, 'हम तुम्हारे हैं'
कहूँ मैं, 'तुम हमारे हो'
न मिल पायें कभी लेकिन
नदी के ज्यों किनारे दो

पठाते सुधि लहरियों से
सदा संदेश तुम रहना
बहुत होगा मुझे इतना
कि जीवन के सहारे को
हँसी ऐसी न दो नीलाम कर दे फूल सा दुनिया,
दरद ऐसा नहीं देना कि हिमकण सा पिघल जाऊँ !

गगन के चाँद की छाया
लहर पर जब उतर आई
उमड़ आया तभी सागर
ललक छाती उभर आई
मिलन गति-हीन है, जड़ है
मचलकर हर लहर बोली
न सागर ही कभी सोया
न पूनम ही ठहर पाई
बढ़ाना प्यास मत इतनी दुखी हो मैं ज़हर पी लूँ,
नहीं आराम वह देना कि फागुन भी नहीं गाऊँ !

अधर पर ले दहकती लौ
हृदय में स्नेह ले गहरा
दिया देता रहा चुंबन—
रतन पर रात भर पहरा
नहीं सूरत तुम्हारी उस
घड़ी से भूल पाया हूँ
विदा में मुसकराते ही
कि जब दृग नीर था लहरा
तुम्हारा प्यार ही मुझको करे मजबूर जीने को,
हृदय की वेदना अपनी न कह पाऊँ न सह पाऊँ !

विरह की रात आँखों में
मिलन की कल्पना मन में
रहूँ आधा पिपासा और
आधा तृप्त जीवन में
तुम्हें बस खोजने की चाह
ही वरदान हो ऐसा
कभी ले जाय मरघट में
कभी ले जाय मधुबन में
तुम्हारी याद ही मेरे हृदय में इस तरह सिमटे,
कि रूठा जो रहा उस गीत को गाकर मना लाऊँ !

आज पहली बात···



आज पहली बात पहली रात साथी !

चाँदनी ओढ़े धरा सोई हुई है !
श्याम-अलकों में किरण खोई हुई है !
प्यार से भीगा प्रकृति का गात साथी !
आज पहली बात पहली रात साथी !

मौन सर में कंज की आँखें मुंदी हैं !
गोद में प्रिय भृंग है बाहें बँधी हैं !
दूर है सूरज, सुदूर प्रभात साथी !
आज पहली बात पहली रात साथी !

आज तुम भी लाज के बन्धन मिटाओ !
खुद किसी के हो चलो अपना बनाओ !
है यही जीवन, नहीं अपघात साथी !
आज पहली बात पहली रात साथी !

तुम्हारी बाट निहार निहार...



तुम्हारी बाट निहार निहार थके नयनों में नींद घुली !

पंथ पर बिछी बिछी पलकें,
स्वयं बन गईं पंथ की धूल !
तुम्हारी याद कसक कर आज,
लजाने लगी नुकीला शूल !

निशा के आँसू में कर स्नान चाँदनी निखर पड़ी उजली !

पुतलियों की शैया पर प्यार,
सो गया तुम्हें पुकार पुकार !
तभी चमकी सुधि-सौदामिनी,
खुले दृग-कोरों के लघु द्वार !
बढ़ा खारी पानी का वेग क्षितिज की काली रेख धुली !

प्रलय की गोद, प्रणय की आस,
धधकते अंगारों सी प्यास !
न सोये, जागे भी तो नहीं,
कभी मुसकाये कभी उदास !
इसी ही तरह विशाला रात नयन के लघु पलड़ों पर तुली !

*

सब इशारे जानता हूँ···



मैं स्वयं को तो नहीं पहचान पाया
पर तुम्हारे सब इशारे जानता हूँ !

ये अधर पर जागती-सोती उषा है,
ये कपोलों से बरसती चाँदनी है !
ये मदिर मुसकान में मधुमास फूला,
नील नभ से नयन में सौदामिनी है !
एक पल भर को हटा घूँघट ज़रा-सा
और मेरे लोचनों ने ज्योति खोई !
दृष्टि से हर सृष्टि का सौन्दर्य ओझल
पर तुम्हारे रूप की छबि जानता हूँ !

आज भी मेरे लिए तुम स्निग्ध दर्पण,
शक्ल जो मेरी चुरा दूना निखरता !
मैं स्वयं पर मिट गया हूँ, बस इसी से,
प्यार मेरा पा गया ख़ुद ही अमरता !
किन्तु फिर भी सोचता हूँ यह हमेशा
तुम मुझे छलते रहे हो, या तुम्हें मैं !
ज़िन्दगी मेरी स्वयं ही प्रश्न है, पर
मैं तुम्हारे प्रश्न का हल जानता हूँ !

एक दिन वह था कि मैं तुममें बँधा था,
किन्तु बंदी हो गए तुम आज मुझ में !
धड़कनों की थाप, साँसें बाँसुरी हैं,
गा रहे तुम गूंजती आवाज़ मुझ में !
प्राण को तुम पीर का वरदान देकर
शाँति का अभिशाप मुझसे ले गए हो !
क्या पता तुम दूर कितने हो नयन से
किन्तु कितने पास हो यह जानता हूँ !

प्राण, इतना प्यार तुमने दे दिया है,
साँस जिसका भार अब तक ढो रहे हैं !
गीत मेरे चूम कर जग के अधर को,
आज मुझसे ही पराये हो रहे हैं !
साँस मेरी, प्यार तेरा, गीत जग के
एक वेणी तीन डोरी से गुँथी है !
तुम किसी के हो भला इससे मुझे क्या
मैं तुम्हारा हूँ यही बस जानता हूँ !

मैं स्वयं को तो नहीं पहचान पाया
पर तुम्हारे सब इशारे जानता हूँ !

पलकों में पूनम बंद हुई···



जब से तुमने घूँघट से झाँक लिया,
तब से मेरी पलकों में पूनम बंद हुई !

बन गई नयन की नींद तुम्हारी छबि राका,
सुमनों ने मेरी ओर ईर्ष्या से ताका,
तब से बिछड़ा मुझसे मेरा अपनापन है
इतना बरसा था स्नेह तुम्हारी सुषमा का ।
प्यासे मन-सुमनों के मधु-अधर खुले,
तेरी पद रज ही उन पर झर मकरंद हुई !

पथ बोला यूँ 'मंज़िल है गति की परिभाषा।'
मैं बोला 'पथ सम्मुख यह जीवन की आशा।'
तब कहा किसी ने 'रूप अधिक बढ़ जाता है
मुख पर यदि घूँघट हो हल्का सा झीना सा।'
उस ओर दिखी मंज़िल कुछ धुँधली सी,
इस ओर पैर की गति स्वमेव स्वच्छंद हुई !

तुमने मुझको अभिशाप दिया, जग में आया,
जग के अभिशापों के कारण कवि बन पाया,
इन बरसाती आँखों के गीले गीतों पर
तपते सूरज ने सदा करी जलती छाया।
तेरे वियोग में पहला गीत लिखा,
तब से यह माटी की काया जग वंद्य हुई !

साँसों को तेरी मिली अछोर कहानी है,
आँखों को मेरी मिला रुपहला पानी है,
भावों की गंगा चढ़ प्राणों पर फैल गई
गीतों की क्यारी में फिर खिली जवानी है।
तुझको छूकर यह मस्त बयार बही,
हर कली कल्पना की खुल कर नव छंद हुई !

जब से तुमने घूंघट से झाँक लिया,
तब से मेरी पलकों में पूनम बंद हुई !

लाज के बन्धन मिटा दो···



लाज के बन्धन मिटा दो हेम-गाते !
आज की मधु-रात यह वर चाहती है !

चाँद की छाती तले मृदु चाँदनी है,
व्योम की सुख-सेज सोई यामिनी है,
शबनमी मुसकान कमलों के अधर पर
प्राण में सोई भ्रमर की रागिनी है !
रूठ लेना फिर कभी, पर प्यास मन की
आज तो अभिसार के पल चाहती है !

रोक लूँ कैसे हृदय की भावनाएँ,
दूँ जला कैसे मचलती कामनाएँ,
आज इनको भी मिले वरदान इतना
एक पल भर के लिए बस जन्म पाएँ !
होंठ के नभ से भुजाओं की परिधि में
प्यार की बदली बरसना चाहती है !

आज की इस रात पर अधिकार मेरा,
क्या पता होगा कहाँ कल का सवेरा,
मैं भटकता-घूमता इस द्वार आया
जा लगेगा कल कहीं पर और डेरा !
है नहीं इतना समय सोचो-विचारो
चाँद की माया सिमटना चाहती है !

पाप क्या है ? पुण्य क्या ? सोचें पुजारी,
देवता बन जायँ, जिनकी चाह भारी,
कल्पना है स्वर्ग कोरी कल्पना है
सत्य मैं, तुम, प्यार की बातें तुम्हारी !
दो उठा परदे पलक के पुतलियों से
ज्योति प्राणों में उतरना चाहती है !

लाज के बन्धन मिटा दो हेम-गाते !
आज की मधु-रात यह वर चाहती है !

चन्द्रमा की किरन···



फूल के गाल पर रात भर जागकर,
गीत लिखती रही चन्द्रमा की किरन !

रात की गोद में सो रहा है जहाँ,
चाँद की गोद में सो रही रात है।
प्यार के होठ में गीत की धड़कनें,
गीत के होठ में दर्द की बात है।
हर कली हर सुमन पर तड़पकर किरन,
गीत लिखती रही, अश्रु ढलते रहे।
भोर में दृग उनींदे खुले पुष्प के,
अश्रु बिखरे तभी दूब में गीत बन।

देह के दीप में स्नेह आया ज़रा,
नैन में प्यार की लौ मचलने लगी।
भावना को मिली शह ज़रा रूप की,
धूप को चाँदनी में बदलने लगी।
प्यास आई अधर के किनारे मगर
घोल डाला विरह ने ज़हर का घड़ा।
प्यास फिर भी अमर हो गई पी ज़हर,
आँख लेकिन सँजोती रही सुधि-सपन।

एक मंज़िल उठाये रही शीश को,
कुन्तलों से कुटिल पंथ बिखरे रहे।
प्राण ! तुम भी चले और मैं भी चला,
पथ बताते चरण-चिन्ह उभरे रहे।
थे हज़ारों चरण-चिन्ह सीधे मगर
लौटते राहियों का न था एक भी।
तन कँपा, दृष्टि को आ गई मूर्च्छना,
धड़कनें रुक गईं पर न ठहरे चरण।

आ रही साँस गाती कि तुम आ रहे,
जा रही साँस रोती कि कोई नहीं।
आरती में चढ़े प्राण ने बोल दो,
मूर्तियाँ कब नयन से भिगोई नहीं।
अर्घ्य चढ़ता रहा आँसुओं का सदा,
पर न प्रतिमा कभी ये मुखर हो सकी।
कर जुड़े ही रहे, सर झुका ही रहा,
वंदना में मुँदे ही रहे ये नयन।

बाट के पल बने जा रहे हैं गगन,
पीर की डोर पर पुतलियाँ झूलतीं।
सृष्टि के जन्म से मन तुम्हें जानता,
बावरी आँख ही पर रही भूलती।
साँस को तुम मिले रुक गई धड़कनें,
आँख को तुम मिले तो नज़र खो गई।
पास भी तुम नहीं दूर भी तुम नहीं,
खोजने को कहाँ पथ करूँ मैं सृजन।

फूल के गाल पर रात भर जागकर,
गीत लिखती रही चन्द्रमा की किरन !

पिया अलबेला है···



कर सोलह सिंगार पिया अलबेला है !

नील गगन जिसकी काया की परछाई,
कुटिल भौंह से बनी क्षितिज की गोलाई,
चंदा जिसका मुख, रवि छवि का उजियाला,
जगमग बूंद पसीने की तारक-माला,
साँसें सुखद बयार
सपन संसार
पिया अलबेला है !

ऊषा, जिसके अधरों पर जगती लाली,
मावस, सोकर बिखर गई अलकें काली,
संध्या, नीलिम नयनों में आलस आया,
युवा चाँदनी, सुघड़ कपोलों की छाया,
शबनम टूटा हार
भोर के द्वार
पिया अलबेला है !

बहक गई कल्पना वसंती फूल खिले,
तूली की भूलों में रति से रूप मिले,
सागर, सोकर पहली पहली अँगड़ाई,
दुनिया, पलकों पर सपनों की पहुनाई,
हँसते बनी बहार
मान पतझार
पिया अलबेला है !

रोष जेठ में जलती धरा सिसकती है,
पीर स्वयं सावन में पिघल बरसती है,
पिया पिया कह पपिहा जिसे बुलाता है,
बादल के पीछे वह रास रचाता है,
बिजली बनी सितार
गरज मल्हार
पिया अलबेला है !

अमर सुहागन जाग द्वार पर पिया खड़े,
बीत न जाय मिलन की बेला मौन पड़े,
देख मानिनी किरन-पालकी आई है,
जो मनोज ने, रति ने स्वयं सजाई है,
जीवन, मरण कहार
खड़े तैयार
पिया अलबेला है !

कर सोलह सिंगार पिया अलबेला है !

प्रीत का गीत···



प्रीत का गीत भी क्या अजब गीत है,
जिस कलम ने लिखा काँपकर रह गया !

ओठ पर ओठ की मधु-मुहर लग गई,
रूप के चाँद में दाग़ सा आ गया।
बाहुओं में बँधी गर्म साँसें खुलीं,
सृष्टि में ध्वंस का राग सा छा गया।
प्राण में प्यार की जब जलीं होलियाँ,
आँख ने सागरों के हृदय भर दिये।
दर्द का गीत मन की तपन से पिघल,
मोतियों सा ढला आँख से बह गया !

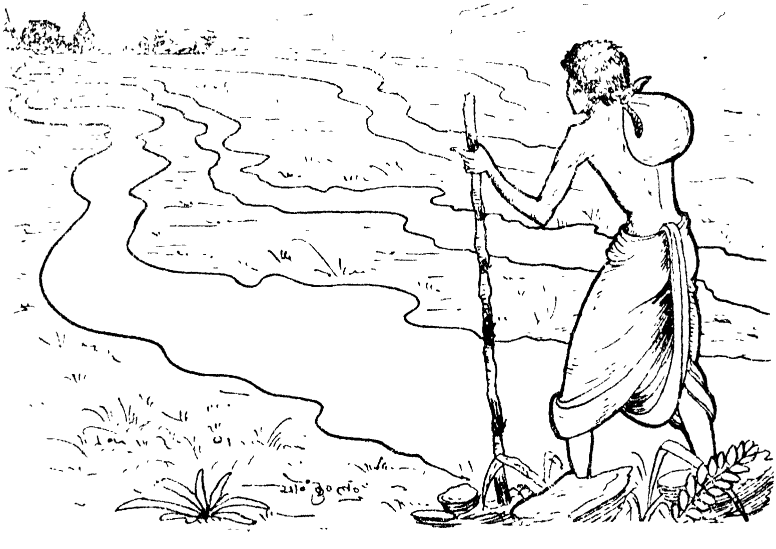
भोर में हर कली नव उमंगों भरी,
भृंग से बाग में ब्याह करती रही।
साँझ को फिर वही धूल में मूर्च्छिता,
प्यार की पीर से आह भरती रही।
प्रात में रोज़ कितनी सुहागन हुईं,
रात में रोज़ कितनी अभागन हुईं।
धार का बुलबुला प्यार का ये महल,
भोर को बन गया साँझ को ढह गया !

राह के कंकरों के अधर जब खुले,
पैर ने रक्त अपना पिलाया तभी।
धूल ने भूल से नीर माँगा ज़रा,
ख़ून का कर पसीना बहाया तभी।
राह के अंत पर जब मिली मंज़िलें,
प्राण से शक्ति संवेदना की गई।
मंज़िलें मोद से गोद लेंगी मुझे,
बस इसी चाह में आह सब सह गया !

स्याह था मन मगर बाहरी रूप में,
ज्योति की लौ सिंदूरी बुलाती रही।
स्याह था तन मगर प्यार उर में लिये,
बावरी प्रीत ख़ुद को जलाती रही।
'एक पल मैं जलूँगा अरे निर्दयी,
भोर तक किन्तु तुम भी सुलगते रहो।
कल नया जन्म ले मैं दिया बन हँसू,
तुम शलभ बन जलो,' हर शलभ कह गया !

प्रीत का गीत भी क्या अजब गीत है,
जिस कलम ने लिखा काँपकर रह गया !

पिया की नगरिया···



पंथ हैं हज़ारों एक पिया की नगरिया !

आग से खिला है फाग
राग ये थके हुए,
पाँव में हुए हैं घाव
गाँव में रुके हुए,
आह की उड़ाती धूल, चाह की डगरिया !

साँस में बढ़ी है प्यास
आस पर घटी नहीं,
लेख जो लिखे थे देख
रेख भी मिटी नहीं,
गीत ने भरी है आज प्रीत से गगरिया !

नैन को नहीं है चैन
रैन को पुकारते,
नीर के चले हैं तीर
पीर को उभारते,
आँख में छुपाती पाँख सावनी बदरिया !

देह का बनाया गेह
नेह आरती जली,
प्राण ! ये बुलाते प्राण
मान भावना ढली,
लाज ने उतारी आज शीश से चुनरिया !

पंथ हैं हज़ारों एक पिया की नगरिया !

फिर आऊगा…



मुझको भूल न जाना रानी ! फिर आऊँगा ।

हो सकता है बदल जाय मेरा यह चोला,
लेकिन मन में प्यार यही भर कर लाऊँगा ।

तारों वाली लाल चुनरिया ओढ़े ऊषा
जब सूरज के पथ में रोली बिखरायेगी ।
प्रियतम की गोरी गोरी बाँहों में सिमटी
प्रथम समर्पण में सूरजमय हो जायेगी ।
तब तुम अलस उनींदे नयनों से निहारना,
मुझको अंबर के मावस वाले कोने में ।
विवश डूबता एक सितारा कहीं दूर से,
मैं तुमको अपलक निहारता खो जाऊँगा ।

जब आँखें खुलते ही सब कलियाँ उपवन की
मलयानिल को शीश झुकाकर मुसकायेंगी।
अपनी पँखुरियों पर 'प्यार अमर है' लिखकर
किसी मूर्ति के पग में सिर धर सो जायेंगी।
तब तुम उपवन में जाना भँवरे छेड़ेंगे,
फूल बुलायेंगे, सौरभ मिलने आयेगा।
मैं काँटों वाली झाड़ी से छिपा वहीं पर
पकड़ तुम्हारा आँचल पल भर ठिठकाऊँगा।

जब ऊदे ऊदे बादल सावन में रिमझिम
कजरारी आँखों से होड़ लगा बरसेंगे।
गरज जगा देगी जब सोये सपन पुराने
मन के सूखे घाव हरे होकर सरसेंगे।
अरुण हथेली पर धर स्वर्ण कपोल, नयन भर,
आँचल भू पर डाल विसुधि में खो जाओगी।
मैं भूला भूला सा पवन झकोरा बनकर,
गोरे मुख पर काली अलकें बिखराऊँगा।

जब चंदा के अधरों पर मुसकान जगाती
चाँदी के रथ में बैठी पूनम आयेगी।
विस्मृति में धुँधलाये चित्रों को निज कर से
परस तनिक सा उजला कर चमका जायेगी।
निखर निखर कर रात पुरानी बात कहेगी,
शबनम बनकर चारों ओर विरह बरसेगा।
मैं तब दूर कहीं मुरली में सिसक सिसक कर,
अपने मन की पीर गीत में भर गाऊँगा।

जब हाथों में हाथ लिये लहरें आयेंगी,
आँख मिचौनी खेलेंगी तट को छू छू कर।
अलसाई सी संध्या में रीती गागर ले
तुम उदास सी बैठोगी रेतीली भू पर।
चिर विरही तट के कण कण के लघु दर्पण में,
जब तुम देखोगी अपनी धुँधली परछाईं।
मैं छोटा सा एक बुलबुला पास तुम्हारे,
आकर पानी की शैया पर सो जाऊँगा।

मुझको भूल न जाना रानी ! फिर आऊँगा।

काया पर है माटी का अधिकार···



काया पर है माटी का अधिकार सदा,
इसीलिए इससे तुम प्यार नहीं करना।

शबनम की भीगी चादर ओढ़े सोतीं,
हरी-भरी सेजों पर जो भोली कलियाँ।
जिन फूलों की मुसकानों से अलस सुबह,
रोज़ सुहागिन होतीं मधुबन की गलियाँ।

इन फूलों पर, कलियों पर, वल्लरियों पर,
इन पल्लव-दल, इन तितली किन्नरियों पर
पतझर का होता आया अधिकार सदा,
इसीलिए इनसे तुम प्यार नहीं करना।

घेरे में डाले चंदा को नाच रहे,
रास रचाकर ठुमक ठुमक प्यारे तारे।
बिजली का कंठा पहने मदिरा पीकर,
झूम रहे मतवारे बादर कजरारे।
इस बिरहन बैरी शशि पर, तारागन पर,
इस चंचल बिजली पर, इस उड़ते घन पर
अंबर का होता आया अधिकार सदा,
इसीलिए इनसे तुम प्यार नहीं करना।

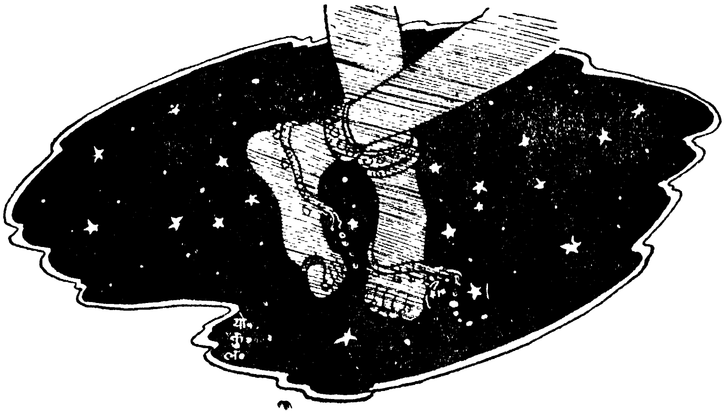
उजला हिम परिधान धरे गिरि-मालायें,
जिनके पैरों पड़ती थक कर हरियाली।
झूल रही उन्नत छाती पर जलमाला,
कमर करधनी झरने की झालरवाली।
इन गिरि-शृंगों पर, हिम की रजताभा पर,
इस हरियाली पर, इस निर्झर, सरिता पर
भूतल का होता आया अधिकार सदा,
इसीलिए इनसे तुम प्यार नहीं करना।

ये ऊषा से होठ, निशा सी घन अलकें,
ये प्रभात से गाल, चकित मृग से लोचन।
सावन-सी मुसकान वसंती बोल मधुर,
बरबस बाँधा हुआ दुपहरी सा यौवन।

बालों पर, गालों पर, अधरों, नयनों पर,
यौवन पर, मुसकानों पर, मधु-बयनों पर
लपटों का होता आया अधिकार सदा,
इसीलिए इनसे तुम प्यार नहीं करना।

काया पर है माटी का अधिकार सदा,
इसीलिए इससे तुम प्यार नहीं करना

पिंजरे में बंदी कर डाला··



पिंजरे में बंदी कर डाला, कब का तुमने बैर निकाला !
खोलो इसके द्वार सलोनी ! मुझको अपने घर जाना है !

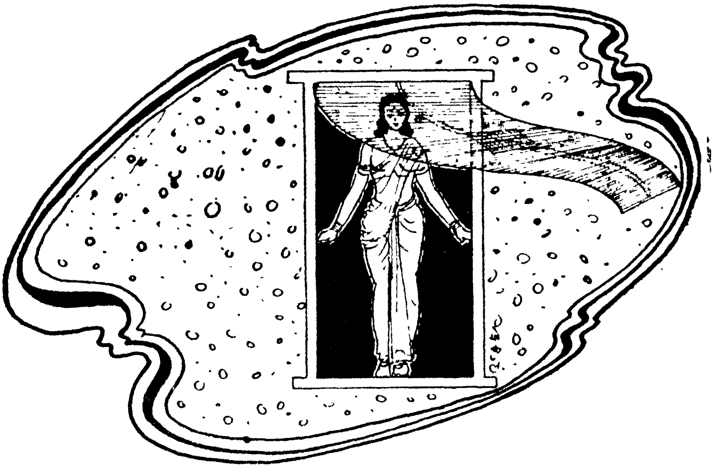
उस घर की छत नील गगन है,
सूरज दीवा, शशि दर्पण है ।
मेरी पग-पायल से टूटे
घुँघरू जो, ये तारागन हैं ।
चार दिशा जिसकी दीवारें,
पुष्प लता तरु बंदनवारें ।
जाने दो अब देर हो गई मुझको नया दिया लाना है !

संध्या ऊषा द्वार रंगीले,
ओस बिखेरे मोती गीले,
किरन धूप की चादर बुनती
श्याम घटा आती गगरी ले।
फूलों वाली चादर ओढ़े,
द्वार बहार खड़ी कर जोड़े,
पतझर की चोली उतारकर फिर वसन्त में मुसकाना है!

पवन जहाँ बिजना झलती है,
आयु नहीं घटती ढलती है,
नींद प्रलय बन जाती मेरी
जग जाऊँ दुनियाँ चलती है।
जब तक ये बन्धन, ये घेरा,
कैसे जागे मिलन सवेरा,
तार तार हो गई चुनरिया टूटा हर ताना-बाना है!

इधर यहाँ मेरी मजबूरी,
उधर पिया की प्रीत अधूरी,
आज न रोको, देखो मेरी
माँग हुई जाती सिन्दूरी।
मंगल-बेला शकुन भरी है,
परी बुलाने को उतरी है,
ये चंचल अंचल अब उनके पीताम्बर से बँध जाना है!

अभी कल स्वप्न दीखा है...



अभी कल स्वप्न दीखा है
कि तुम इस द्वार आये हो।

वही नीले समुन्दर सी बड़ी आँखें, झुकीं पलकें,
वही चंदा छिपाने को मचलती मावसी अलकें,
गुलाबों की पंखुरियों के किनारों से अधर वे ही
वही चितवन कि जिसमें प्यार के मधुघट छलक ढलकें।
वही दीवा जिसे अब तक जमाने से बचाये हो
कि अंचल ओट लाये हो।
अभी कल स्वप्न दीखा है कि तुम इस द्वार आए हो।

रहा अब तक अधूरा जो वही अरमान प्राणों में,
वही मुसकान जो खिलती रही मेरे तरानों में,
वही पायल जिसे अभ्यास था चुपचाप चलने का
वही गलहार, मेरा नाम जिसके बीच दानों में।
वही नज़रें कि ज्यों लज्जा उलहने को मिलाये हो
निशा महँदी रचाये हो।
अभी कल स्वप्न दीखा है कि तुम इस द्वार आये हो।

हुआ आखिर वही, तुमको हमारा प्यार ले आया,
बुलावा ब्याह का दे, पीर का त्यौहार ले आया,
चलो यह मान लेते हैं, न अपने आप आये हो
निठुर ! तुमको तुम्हारा ही हृदय लाचार ले आया।
कहें अब क्या अधिक तुमसे स्वयं तुम भी सताये हो
पलक पावस बसाये हो।
अभी कल स्वप्न दीखा है कि तुम इस द्वार आये हो।

फड़कता दाहिना दृग और ये सपना सवेरे का,
अगर हो जाय सच, बंदी खुले इस बंद घेरे का,
हुआ जब सत्य ही सपना, सपन फिर सत्य क्या होगा ?
दिया अब देखता है पथ, किरन के एक फेरे का।
रहो चाहे जहाँ भी तुम, न हो सकते पराये हो
भले अंतर बढ़ाये हो।
अभी कल स्वप्न दीखा है कि तुम इस द्वार आये हो।

कंचन मन कुन्दन बन जाये...



वह दिन कब आएगा जिस दिन कंचन मन कुन्दन बन जाए !

सुलगे सब शृंगार उमर भर
सूरज बन जाए प्राणों का,
कभी विरह का सपन न टूटे
प्राण ! गुलाबी अरमानों का,
लेकिन मेरी पीर कुमारी
उस दिन ब्याह करेगी तुझसे,
जिस दिन मेरा आँसू तेरे
हाथों का दर्पण बन जाए !

वह दिन कब आएगा जिस दिन कंचन मन कुन्दन बन जाए !

•

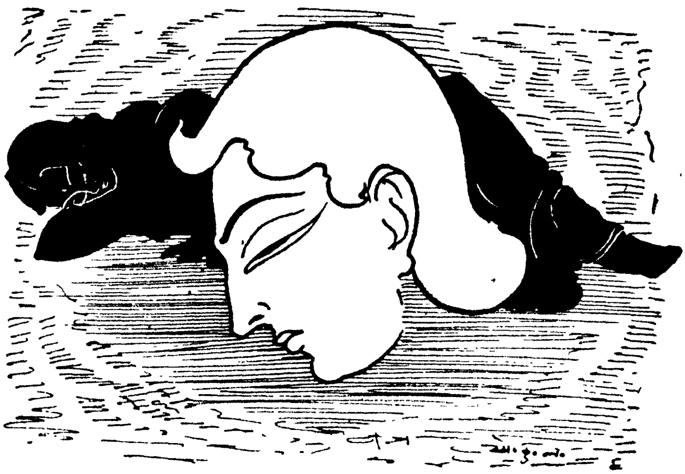
चंदा भी मेरी आँखों को
नींद न लाया, सागर लाया,
मन के आँगन में पतझर ने
होली का त्यौहार मनाया,
पर कोई कहता कानों में
अभी दरद का बचपन प्यारे,
जलन उसे कहते हैं जिसमें
गरम जेठ, सावन बन जाए !
वह दिन कब आएगा जिस दिन कंचन मन कुन्दन बन जाए !

स्नेह जलाकर किया उजाला
प्राण रुलाकर गीत बनाये,
याद सिसकती रही अकेली
पर तुम फिर भी रहे पराये,
तुम उस दिन आओगे मुझसे
झरता हुआ सितारा बोला,
जिस दिन प्यासी तड़पन तेरे
अधरों का चुम्बन बन जाए !
वह दिन कब आएगा जिस दिन कंचन मन कुन्दन बन जाए !

बन्धन में इतने दिन बीते
जंजीरें बन गईं सहेली,
दर्शन की सौगंध लिए है
पर प्राणों की लगन अकेली,
अभी कह रही थी दीवानी
'उस दिन केश गुँथाऊँगी मैं,
जिस दिन मेरा बन्धन तेरा—
जड़वाँ कर-कंगन बन जाए !'
वह दिन कब आएगा जिस दिन कंचन मन कुन्दन बन जाए !

मन तेरे मन्दिर का दीवा
तन तेरी पूजा की थाली,
साँस साँस आरती तुम्हारी
अर्घ्य भरी दृग नीलम प्याली,
प्रीत तुम्हारी माँग भरूँगा
जिस दिन ये जादू कर दोगी,
कंठ कंठ राधा बन जाए
गीत गीत मोहन बन जाए !
वह दिन कब आएगा जिस दिन कंचन मन कुन्दन बन जाए !

जागते हैं प्राण मेरे···



सो रही है रात गुमसुम
जागते हैं प्राण मेरे।

है बहुत खामोश मौसम
दे रहे पहरा सितारे
ढल रही बेहोश शबनम,
उम्र की आवाज़ सुनकर
जग उठे अरमान मेरे।
सो रही है रात गुमसुम
जागते हैं प्राण मेरे।

याद परदे से उठाती
आ रही है, साथ तुम हो
तिलमिलाती मुसकुराती,
कह रहे मजबूर बन्धन
लौट जा मेहमान मेरे।
सो रही है रात गुमसुम
जागते हैं प्राण मेरे।

करवटें जलने लगी हैं
डोर साँसों की सँभाले
ज़िन्दगी ढलने लगी है,
आह ! कब तक रो सकेंगे
ओस बनकर गान मेरे।
सो रही है रात गुमसुम
जागते हैं प्राण मेरे।

आज तक गाया तुम्हें है
गीत ने भी, प्रीत ने भी
पर नहीं पाया तुम्हें है,
अब किसे पूजूँ बताओ
हैं नहीं भगवान मेरे।

सो रही है रात गुमसुम
जागते हैं प्राण मेरे।

मेरे गीतों का घूँघट मत खोलो···



मेरे गीतों का घूंघट मत खोलो, प्रिय नयन तुम्हारे भर भर आयेंगे !

आँसू को बहलाकर मुसकानों से
अंगार छिपा गालों की लाली में,
आहों को मादक स्वर का रूप दिए
बेहोश पड़े अपनी बेहाली में,
तुम हमदर्दी के स्वर धीरे बोलो, ये खुद रोयेंगे तुम्हें रुलायेंगे !

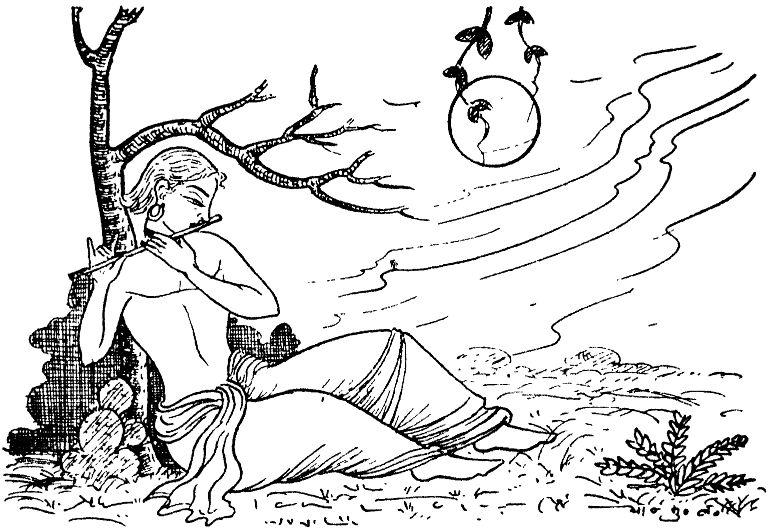
जलते हैं कितने तारे इन्हें पता
लेकिन घावों की गिनती ज्ञात नहीं,
आँसू, काजल की मावस के प्यारे
अपनाता मुसकानों का प्रात नहीं,
मत इनकी पीर खरीदो, जग भर के बादल, दीपक, सागर बिक जायेंगे !

सुख ने पिछले जनमों का बैर लिया
घर का दरवाज़ा भूल गई निंदिया,
मिट गई समय के एक झकोरे से
मन की कलिका के भाल जड़ी बिंदिया,
पिघले लोहे से गरम गरम आँसू रेशम के अचल पोंछ न पायेंगे !

तुमने जिसको प्रिय आज दुलारा है
वह गीत नहीं घायल कवि का मन है,
बरजा दुनियाँ ने किन्तु हठीले ने
दे दिया रूप को अपना जीवन है,
मिट जाने दो इसको मिट जाने दो, शायद कल फूल अधिक मुसकायेंगे !

मेरे गीतों का घूंघट मत खोलो,
प्रिय नयन तुम्हारे भर भर आयेंगे

जब से तुम खोये हो···



जब से तुम खोये हो इस मेले में, तब से गीतों में दर्द-भरी गुंजन !

तुमको मन ने कंचन सा पाया था,
उस दिन मरुथल में सावन आया था,
अधरों के एक धधकते चुम्बन ने
सूरज को भी जलना सिखलाया था।
पर समय लुटेरे ने ऐसा लूटा,
हाथों से तेरा दामन भी छूटा,
जिससे तुमने सिंगार किया अपना, वह टूट गया मेरे मन का दर्पण !
जब से तुम खोये हो इस मेले में,
तब से गीतों में दर्द-भरी गुंजन !

हँसते फूलों को उपवन कह डाला
लेकिन झरती शबनम को भूल गया,
पर जीवन की परिभाषा सा बनकर
मेरी पलकों पर आँसू झूल गया,
दृग उलझे गीतों की तस्वीरों से
जिनका हर घाव बिंधा था तीरों से,
तब से ही प्राण ! हठोली आँखों ने पलकों में बाँध लिया भीगा सावन !
जब से तुम खोये हो इस मेले में,
तब से गीतों में दर्द-भरी गुँजन !

धरती जलती तो बादल आते हैं,
दाने मिटकर अँकुर बन जाते हैं,
सीपी मिटती पर मोती दुलहन की
नथ में बिंध गालों को छू जाते हैं।
जग भर की झोली रतनों से भर दो,
पर मुझको केवल इतना उत्तर दो,
रज,गगन,पवन,जल,अगन रची काया कब होगी तेरे आँगन का रज-कण !
जब से तुम खोये हो इस मेले में,
तब से गीतों में दर्द-भरी गुँजन !

कितने आँसू का अर्घ्य चढ़ाना है,
कितनी आहों का दीप जलाना है,
मन के सपने बेले की कलियों से
बोलो, कैसा गजरा गुँथवाना है।
देखो पूजन की बेला बीत रही,
मुझसे मन्दिर की जड़ता जीत रही,
ओ पत्थर के तन-मन वाले साजन ! कब अपना कह भर लोगे आलिंगन !
जब से तुम खोये हो इस मेले में,
तब से गीतों में दर्द-भरी गुँजन !

सौ सौ जनम प्रतीक्षा कर लूँ…



सौ सौ जनम प्रतीक्षा कर लूँ
प्रिय, मिलने का वचन भरो तो !

पलकों पलकों शूल बुहारूँ
अँसुअन सींचूँ सौरभ गलियाँ !
भँवरों पर पहरा बिठला दूँ
कहीं न जूठी कर दें कलियाँ !
फूट पड़े पतझर से लाली
तुम अरुणारे चरण धरो तो !
सौ सौ जनम प्रतीक्षा कर लूँ
प्रिय, मिलने का वचन भरो तो !

लट बिखराये जोग रमाये
प्रीत कुँआरी तुम्हें बुलाये !
बैरिन पीड़ा मेरे मन में
बिना धुएँ का हवन कराये !
साँस साँस फिर रास रचा ले
बन घनश्याम उमड़ बिखरो तो !
सौ सौ जनम प्रतीक्षा कर लूँ
प्रिय, मिलने का वचन भरो तो !

रात न मेरी दूध नहाई
प्रात न मेरा फूलों वाला !
तार तार हो गया निमोही
काया का रंगीन दुशाला !
जीवन हो जाये सिन्दूरी
तुम चितवन की किरण करो तो !
सौ सौ जनम प्रतीक्षा कर लूँ
प्रिय, मिलने का वचन भरो तो !

सूरज को अधरों पर धर लूँ
काजल कर आँजूं अँधियारी !
युग युग के पल छिन गिन गिन कर
बाट निहारूँ प्राण तुम्हारी !
साँसों की जंजीरें तोड़ूँ
तुम प्राणों की अगन हरो तो !
सौ सौ जनम प्रतीक्षा कर लूँ
प्रिय, मिलने का वचन भरो तो !

परछाई भी हुई पराई...



जब से तुम बिछड़े हो मेरी परछाईं भी हुई पराई !

चाँद गरम हो गया तभी से
अंगारे बन गये सितारे।
तुम क्या रूठे हो उपवन से
कलियों पर चल गए दुधारे।
बरस रहीं फूलों की पलकें,
धूल भरी कुंजों की अलकें।
ऐसी पीर जगी कोयल में गा गा कर भी सुला न पाई !

कितने सूरज थक कर डूबे
कितनी सिर से धूप उतारी।
बहला बहला चाँद सुलाये
झुँझला झुँझला रात गुज़ारी।
इस खोये खोये जीवन में,
उजड़े उजड़े सूनेपन में।
मेरी धीर बँधाते भोले गीतों की आँखें भर आईं !

जितने फूल खिले अधरों पर
मूरत मूरत पर बिखराये।
द्वार द्वार पर माथा टेका
मंदिर मंदिर दीप जलाये।
नयनों ने आरती सँजोई,
साँस वंदना गाती रोई।
पूजा के पावन दीपों ने मेरे मन की जलन चुराई !

जो आवाज़ तुम्हें देता हूँ
बनकर गीत चली आती है।
उमड़ घुमड़कर सुधि की बदली
अंचल गीला कर जाती है।
कैसे गीतों को ठुकराऊँ,
कैसे आँसू को दुलराऊँ।
जब से प्रीत गीत ने चूमी जाग न पाया, नींद न आई !

जब से तुम बिछुड़े हो मेरी
परछाईं भी हुई पराई !

वह रात···



वह रात कसकती है अब भी, जब चाँद देखते हुए प्राण !
तुम बाँहों में शरमाईं थी ।

लज्जा के पहरे में बंदी
जो युग युग तक मन में मचली ।
हर दर्शन में जिसका दर्शन
जिसमें जीवन की चाह खिली ।
वह बात पुलकती है अब भी, जो प्रथम मिलन की बेला में
अधरों पर आ सकुचाई थी ।

अधरों पर मधुर अधर धरकर
पलकें आधी सी बन्द किये।
उस दिन आलिंगन में बँधकर
सौ कल्प मरे सौ कल्प जिये।
वह प्रीत सिहरती है अब भी, जब प्रणय मिला था प्राणों को
चाँदनी चूमने आई थी।

किरणें बेबस सी नियम बँधी
धरती का अँचल छोड़ चलीं।
कलियों, फूलों से, लहरों से
मन के मधु-नाते तोड़ चलीं।
वह साँझ सिसकती है अब भी, जब घटा बनी सी आँखों ने
दी बूँदों भरी बिदाई थी।

फीके-फीके उजले-उजले
रँग लिए सभी तस्वीर रहीं।
हँसने से रोने तक खींची
जीवन की एक लकीर रही।
वह याद घुमड़ती है अब भी, जो पूजा-गीत बना मुझको
तेरे मन्दिर में लाई थी।

वह याद कसकती है अब भी, जब चाँद देखते हुए प्राण!
तुम बाँहों में शरमाई थी।

जवानी गाती है···



कवि लिखता है गीत जवानी गाती है !

जब सोने की सी घड़ियों में दिन निकला,
दिन निकला अंबर से थककर चाँद ढला !
चाँद ढला कलियों ने खोले अवगुंठन,
अवगुंठन से झाँक रही भोली चितवन !
चितवन थी या थे मदिरा के से प्याले,
प्याले पीकर झूमे मधुकर मतवाले !

मतवाले अलियों ने कलियों को चूमा,
कलियों को चूमा सारा मधुवन भूमा !
भूमे कवियों के दिल मस्ती आती है,
ये मदमाते गीत जवानी गाती है !
कवि लिखता है गीत जवानी गाती है !

प्रथम प्रणय की रात चाँदनी खिली हुई,
खिली हुई वसुधा पर मन में घुली हुई !
घुली हुई है नींद नशीली आँखों में,
आँखों में कुछ बात राज कुछ साँसों में !
साँसों में इकरार देह भुज-बन्धन में,
बन्धन में हैं ओठ चाह कुछ सिहरन में !
सिहरन में संगीत प्रीत जीवन भर की,
जीवन भर की हार, जीत जीवन भर की !
अम्बर के नीचे धरती शरमाती है,
ये शरमीले गीत जवानी गाती है !
कवि लिखता है गीत जवानी गाती है !

बाल बिखेरे तरुणी चिल्लाती जाती,
चिल्लाती जाती आगे अरथी जाती !
जाती ओढ़े कफ़न लाश अरमानों की,
अरमानों की जीवन की मुसकानों की !
मुसकानों की घड़ियाँ माथे की लाली,
लाली बन जाती मुख पर रेखा काली !
काली पड़ जाती फिर चंपक सी काया,
काया ने साकार करुण रस अपनाया !
आँख जिसे पल भर निहार भर आती है,
ये दरदीले गीत जवानी गाती है !
कवि लिखता है गीत जवानी गाती है !

ये माटी की काया जिसमें खून भरा,
खून भरा मरघट ने पल में भून धरा !
भून धरा बस राख शेष रह जाती है,
जाती है काया फिर याद न आती है !
आती है जाती है साँसों की आरी,
आरी देती काट ज़िन्दगी ही सारी !
सारी ही दुनियाँ इस पथ पर चलती है,
चलती है, जीती है, मरती जलती है !
जीवन क्या है बात उलझती जाती है,
ये जीवन के गीत जवानी गाती है !
कवि लिखता है गीत जवानी गाती है !

अभी-अभो यह बता गई पुरवाई···



अभी-अभी यह बता गई पुरवाई——
आज किसी बिरहन के आँगन में बरसे ये बादल।

युगों युगों की सूखी महँदी फिर रँग लाई है,
आज किसी की चाहों की क्यारी लहराई है।
सपनों के मेहमान नयन के आगे मुसकाये,
पलकों पर दे भार प्यार ने ली अँगड़ाई है।
अभी-अभी यह सुना गई शहनाई
आज कहीं पर अधर मिले, तन बँधा, झनकती पायल।

दूर चाँद से रह चकोर शिशु तड़पे बेचारे,
किन्तु पड़े शशि-मुख पर निशि के कुन्तल कजरारे।
मरना चाहा अँगारे खाकर पर उम्र बढ़ी,
रुके विरह के पाँव अन्त में पूनम के द्वारे।
अभी-अभी यह निखरी चंद-जुन्हाई
आज किसी का प्यार खिला फिर से जीवन भर जल जल।

एक साँझ पनघट पर छलकी थी मन की गगरी,
जब कि किसी ने देखा, अँचल सरका, लाज भरी।
तब से ही बगिया में कलियाँ हँसना भूल गईं,
कोयल रूठी, उतरी लतिका की धानी चुनरी।
अभी-अभी यह झूम उठी अमराई
आज कहीं राधा निज मोहन से मिलने को व्याकुल।

एक रात बचपन ने सोकर जब आँखें खोलीं,
ऊषा ने मल दी गालों पर यौवन की रोली।
अधरों पर महकी बहार, मृदु नयनों में मदिरा,
'शरमाओ मत' कली भ्रमर को चूम झूम बोली।
अभी-अभी यह जता गई तरुणाई
आज नहीं तो कल हो जाओगे तुम भी प्रिय घायल।

अभी-अभी यह बता गई पुरवाई—
आज किसी बिरहन के आँगन में बरसे ये बादल।

प्राण ! मिलन की रात…



प्राण ! मिलन की रात बुझाओ नहीं दिए को
केवल यही गवाह रहेगा प्रथम प्यार का।

स्नेह भरा यह भी है, मैं भी, तुम भी रानी,
आज प्यार की रात प्यार की भोर जगानी।
हाथ बढ़ाओ नहीं इसे भी मुसकाने दो,
आज हँसें पत्थर भी मुसका रही जवानी।
देख तुम्हारी आँखें इसकी उम्र बढ़ेगी,
हर नग, मोती में लौ सौ सौ दीप जड़ेगी।
रूप बनेगा रूपा यौवन कंचन कुन्दन,
निखरेगा रंग तन पर फूले हर सिंगार का।

इसने देखीं जाने कितनी ऐसी रातें,
किरण बन गई गरम गरम चुंबन की पातें।
पहले दिन जब लाज भरी बोली रति-पति से,
इसे याद हैं उस दिन की भी सारी बातें।
यही प्रीत का एक पूज्य देवता सनातन,
प्रणय शलभ बन तन मन से करता आराधन।
सूरज, चाँद, सितारे तो नभ के शुभ-गाते,
ये सोने का सपना माटी की बहार का।

इसके सम्मुख तुम ऐसी लगती मुसकाती,
जैसे बिजली चंदा को दर्पण दिखलाती।
यह सर्वस्व समर्पण की बेला प्रश्नाङ्क !
दीप्त लाज का दीप आज क्यों नहीं बुझाती।
प्रीत स्वयं ही ज्योतित सौ पूनम की पूनम,
तीरथ का तीरथ प्यासे अधरों का संगम।
मुक्त करों से लुटा रहा है जो उजियारा,
वह प्यासा है केवल अँचल के दुलार का।

अगर कहीं सच हुआ कि ये दुनियाँ नश्वर है,
पल भर का मधु मिलन और फिर विरह अमर है।
सोचो उस दिन की जब हम तुम साथ न होंगे,
कौन सहारा देगा ऐसा किसका घर है।
यही दिया तब हँस हँस जलना सिखलायेगा,
बीती बातें दुहरायेगा बहलायेगा।
एक यही बस गुमसुम अँधियारी रातों में,
सुनने वाला होगा प्रिय मन की पुकार का।

प्राण ! मिलन की रात बुझाओ नहीं दिए को,
केवल यही गवाह रहेगा प्रथम प्यार का।

मुझको तो सृष्टा ने इंसान बनाया है...



मुझको तो सृष्टा ने इंसान बनाया है
मन्दिर का वह आदर्श भरा भगवान नहीं।

मेरी हथेलियाँ बनने से पहले जग में,
ये अरुण सुहाग भरी महँदी अँगड़ाई थी।
आँखें बनते ही सुभग सलोनी मावस ये,
उँगली पर काजल लिए लगाने आई थी।
मैं जान न पाया क्या इसमें था राज़ छिपा,
पहले कलियाँ बन गईं बाद में अधर बने।
मेरा कोमल नन्हा दिल गढ़ने से पहले,
उसकी भी दोनों आँख स्वयं भर आईं थीं।

मेरे आने से पहले रूप अनाथ रहा,
पत्थर की, फूलों की भी थी पहचान नहीं।
मुझको तो सृष्टा ने इंसान बनाया है,
मन्दिर का वह आदर्श भरा भगवान नहीं।

मेरे कपोल से थोड़ा सा सोना बिखरा,
उससे ऊषा अब तक स्वर्णिम कहलाती है।
जब से मेरी पलकों पर तड़प उठे आँसू,
तब से सागर की लहर लहर अकुलाती है।
झरनों ने बहना सीखा मेरी गति निहार,
धरती ने पैर परस सौ सौ उपहार दिए।
चाँदनी अधिक उजली हो जाती, जब मेरी,
शैया पर मुझसे पहले आ सो जाती है।
सारी सुषमा मैंने दहेज में पाई है,
यह प्रकृति-वधू मुझसे करती कुछ मान नहीं।
मुझको तो सृष्टा ने इंसान बनाया है,
मन्दिर का वह आदर्श भरा भगवान नहीं।

मैं आह भरूँ तो तुम कहते कमज़ोरी है,
मैं प्यार करूँ तो तुम कहते नादानी है।
लेकिन सोचो हर सूनी साँस ज़िन्दगी है,
औ' प्यार बिना सारी दुनियाँ वीरानी है।
मुझको रच कर वह कलाकार खो गया कहीं,
मैं हर घूंघट में उसको खोज रहा अब तक।
अपनी कमियों का मुझ पर है दायित्व नहीं,
यदि अपराधी है वह मेरा वरदानी है।
जो कमी रही अब उसको कौन करे पूरी,
उस सृजनहार का कुछ भी पता निशान नहीं।
मुझको तो सृष्टा ने इंसान बनाया है,
मन्दिर का वह आदर्श भरा भगवान नहीं।

संध्या की काली घुंघराली अलकें गूंथीं,
जब मन चाहा राका को पास सुलाया है।
निशि को चूमा, गलबाँही डाले सोया हूँ,
ऊषा के स्वर्ण कपोलों को सहलाया है।
है पाप पुण्य कुछ नहीं दृष्टि का परिवर्तन,
केवल तस्वीरों में ही देखा नर्क बना।
किसने वापस आकर अनुभव बतलाये हैं,
सौ बार रूप ने देवों को ललचाया है।
है रूप जहाँ, मेरी श्रद्धा झुक जाती है,
कैसे कह दूं मैं हूँ मनु की सन्तान नहीं।
मुझको तो सृष्टा ने इंसान बनाया है,
मन्दिर का वह आदर्श भरा भगवान नहीं।

हम आज भी तुम्हारे...



हम आज भी तुम्हारे तुम आज भी पराये,
सौ बार आँख रोई सौ बार याद आये।
इतना ही याद है अब वह प्यार का ज़माना,
कुछ आँख छलछलाई कुछ ओठ मुसकराये।
मुसकान लुट गई है तुम सामने न आना,
डर है कि ज़िन्दगी से ये दर्द लुट न जाए।
कैसे बने तुम्हारी तस्वीर रूप वाले,
तस्वीर खुद बने हैं जो रंग घोल लाए।
हर बार सोचता हूँ इस बार देख लूंगा,
पर खो गई नज़र ही जब भी पलक उठाये।

तुम इस तरह रमे हो हर साँस में हमारी,
छिपते नहीं छिपाए, दिखते नहीं दिखाए।
बदनाम कर दिया है ऐसा गुनाह क्या था,
ले नाम सा तुम्हारा भर नींद मुसकराये।
इस दर्द की कसम है तब तक न साँस लूंगा,
पत्थर नयन तुम्हारे जब तक न छलछलायें।
हर घाव ने बुलाया, हर अश्रु ने बुलाया,
हर दर्द ने बुलाया, बे-दर्द तुम न आए।
हम सा न दूसरा है इतने बड़े जहाँ में,
जब प्यार ने बुलाया, मन्दिर से भाग आए।

तुम मेरे आँसू की बूँद बनो···



तुम मेरे आँसू की बूँद बनो लेकिन पलकों से बाहर मत आना !

ये पवन चुरा ले जायेगी तुमको,
ये गरम किरन झुलसायेगी तुमको !
यदि देख लिया पूनम के चन्दा ने,
डर है कि नज़र लग जायेगी तुमको !
छिपकर रहना दुनियाँ की आँखों से,
कलियों की जादूवाली पाँखों से !

तुम मेरे प्राणों का गीत बनो लेकिन अधरों की सीमा अपनाना !
तुम मेरे आँसू की बूँद बनो लेकिन पलकों से बाहर मत आना !!

जो दर्द रहा मन में हल्का हल्का,
केवल वह ही आँसू बन कर ढलका !
उतने ही कम तूफ़ान उमड़ते हैं,
सागर जितना भी हो गहरे जल का!
जो सुलग सुलग ही रह जाये मन में,
वह आग, राग बनती है जीवन में !
तुम मेरे गीतों का दर्द बनो पर स्वर के पंख लगा मत उड़ जाना !
तुम मेरे आँसू की बूंद बनो लेकिन पलकों से बाहर मत आना !!

हर खिले फूल को तोड़ा माली ने,
बींधा, बेचा कब देखा डाली ने !
पूनम जो निखरी मधु-मुसकानों सी,
खा लिया उसे तम की कंगाली ने !
खिलने का अर्थ यहाँ मुरझाना है,
हँसना आहों को छेड़ जगाना है !
तुम मेरे मन का मधुमास बनो कोयल कितना भी कहे, न मुसकाना !
तुम मेरे आँसू की बूंद बनो लेकिन पलकों से बाहर मत आना !!

जिसको जग ने दुख कह कर माना है,
वह सुख का बे-पर्दा हो आना है !
धरती का जलना और सुलगना ही,
बूंदों वाले बादल का आना है !
वह सत्य न जिसको देख सका कोई,
हर चित्र ओढ़ता रंग-वाली लोई !
तुम मेरी झोली के रतन बनो पर अपना पता न जग को बतलाना !
तुम मेरे आँसू की बूंद बनो लेकिन अधरों से बाहर मत आना !!

बन बन खिली बहार···



बन बन खिली बहार, झूमती अमराई,
मेरे मन की बगिया सूनी कुम्हलाई।

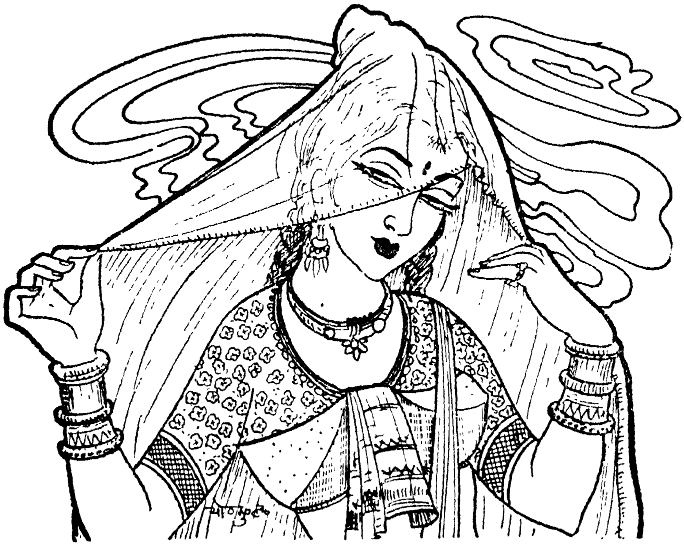
कुछ डाली के सपने पापी पतझर ने आ बीन लिये।
कुछ माटी ने हाथ बढ़ाकर बेदर्दी से छीन लिये।
लेकिन रूठा भाग्य नहीं था फिर फूटी कोंपल कोंपल,
और आज पहरा देता है हर काँटा संगीन लिये।
मेरे आँसू की गवाह ओ कलम आज बतला दे तू,
कब मेरे गीतों में फैलेगी मुसकाकर अरुणाई।
बन बन खिली बहार, झूमती अमराई,
मेरे मन की बगिया सूनी कुम्हलाई।

मौन तोड़ डाला कोयल का सौरभ के मधु-चुम्बन ने।
घूंघट उलट दिया कलियों का साँवरिया के गुँजन ने।
बिखरी ओस कली पर, दूर्वा पर, तरु,तृण पर, कण कण पर,
मन के टुकड़े बिखराये ज्यों किसी चाँद के दर्पण ने।
फूलों की इस चहल पहल में प्यासी आँखें खोज रहीं,
मेरा फूल कौन सा है जिसकी प्राणों में परछाईं।
बन बन खिली बहार, झूमती अमराई,
मेरे मन की बगिया सूनी कुम्हलाई।

बौराई सी पवन छेड़ती फिरती है दुनियाँ भर को।
पीली चूनर ओढ़ धरा दे रही निमन्त्रण अम्बर को।
तितली तड़प तड़प उड़ती मन के भिक्षुक अरमानों सी,
गीत भला बहलायें कब तक थके, रुँधे, रूँठे स्वर को।
तन को मन को बींध रहे हैं तेज़ बाण फूलों वाले,
और आज भी अधर कर रहे अँगारों की पहुनाई।
बन बन खिली बहार, झूमती अमराई,
मेरे मन की बगिया सूनी कुम्हलाई।

जो वसन्त तुमको मेरे घर तक पहुँचाने आयेगा।
हाथों की रेखा कहती है वह पथ पर खो जायेगा।
और अगर आँगन तक गिरता झरता आ पाया तो भी,
अपना सारा हरा भरापन घावों को दे जायेगा।
अरे निठुर वरदानी ! इस मधु-ऋतु पर मान नहीं करना,
जो आँसू के मन्दिर में फूलों के दीप न धर पाई।
बन बन खिली बहार, झूमती अमराई,
मेरे मन की बगिया सूनी कुम्हलाई।

हर द्वार तुम्हारा द्वार दिखाई देता है···



किस जगह गिराऊँ धूल और किस जगह चढ़ाऊँ फूल,
मुझे हर द्वार तुम्हारा द्वार दिखाई देता है।

हर डगर धूप छाँही चादर शूलों फूलों से जड़ी पड़ी,
कुछ मंज़िल पर कुछ छाया में कुछ की चलने को भीड़ खड़ी।
इस पथ जाओ उस पथ जाओ सबका ही एक ठिकाना है,
हर ओर अधर मुसकाते हैं हर ओर बाँह उजड़ी उजड़ी।
किस राह बढ़ाऊँ पैर और किस पथ से मानूँ बैर,
मुझे हर डगर तुम्हारा प्यार दिखाई देता है।

जब तक आँखों पर घूंघट है तब तक प्राणों में प्यार भरा,
किस परदे के पीछे तुम हो यह प्रश्न रहा उर में उभरा।
होंगे कोई तो अधर जिसे तुमने हंसना सिखलाया हो,
बस एक यही आकर्षण है जो लेता मेरी नींद चुरा।
किस पर डालूं अंगार और किसको चूमूं सौ बार,
मुझे हर सूरत में सिंगार दिखाई देता है।

हर भोर सूर्य से लिपटी है, हर साँझ चाँद को चूम रही,
कलियों अलियों ने रास रचे, शलभों की टोली झूम रही।
पलकों से बूंदें टपकीं तो अंचल फैलाये धूल मिली,
तेरे पग छूने को धरती इस महाशून्य में घूम रही।
कब मूँदूं ये दृग सीप, जलाऊँ कब ये मन का दीप,
मुझे हर समय लिए अभिसार दिखाई देता है।

पायल के घुँघरू बोल उठे पैरों के एक इशारे पर,
मीरा साकार उतर आई बजते बजते इकतारे पर।
बैरिन बाँसुरिया गूंज उठी मोहन वृन्दावन में आये,
धड़कनें थाप सी गमक उठीं जोवन के ठाकुरद्वारे पर।
किससे रोकूं ये प्रीत और किस पर वारूँ ये गीत,
मुझे हर साज लिये झंकार दिखाई देता है।

किस जगह गिराऊँ धूल और किस जगह चढ़ाऊँ फूल,
मुझे हर द्वार तुम्हारा द्वार दिखाई देता है।

सूतल नार...



जग री सूतल नार पिया घर जाना है री !

बचपन में गुड़ियों के कितने ब्याह रचाये।
माटी के शत सुघड़ घरोंदे बना मिटाये।
अपनी चंचलता में भूली रही बावरी,
तुझको अपने बिछड़े साजन याद न आये।
ये नैहर का गाँव
यहाँ की चार दिना की छाँव
न मोह बढ़ाना है री !
जग री सूतल नार पिया घर जाना है री !

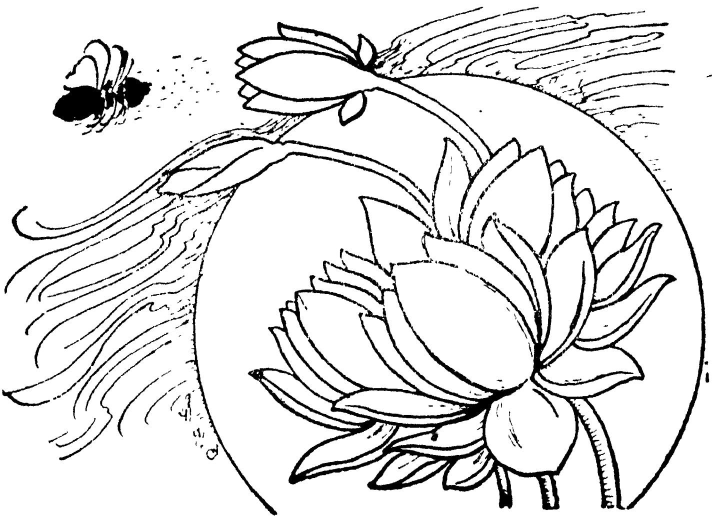
यौवन में अधरों से लाल गुलाब लजाये।
जिधर घुमाये नयन उधर मधुमास खिलाये।
बाँह झूलने पर सुख-सेज बिछाकर तुमने,
चंदा के सम्मुख कितने रति-रास रचाये।
ये काया का रंग
लौटकर जाती हुई तरंग
जिसे बह जाना है री!
जग री सूतल नार पिया घर जाना है री!

अब अलकों की मावस भी पूनम बन आई।
नभ नीले नयनों में काली बदली छाई।
काल कलम से खींच गया रेखायें तन पर,
सूरज भी ढल गया गगन में संध्या आई।
इतना तो कर याद
पिया का घर करना आबाद
कि उसे मनाना है री!
जग री सूतल नार पिया घर जाना है री!

पीली पीली धूप उबटना अंग लगाओ।
किरनों की चोली चूनरी फूलों की लाओ।
शबनम का गलहार, चाँद का सिर पर झूमर,
बिजली की नथ नुपूर तारों के बनवाओ।
मन में मिलन-उमंग
अंग में जगता हुआ अनंग
नहीं शरमाना है री!
जग री सूतल नार पिया घर जाना है री!

माँग भरो सिन्दूर नयन में कजरा डालो।
स्नेह भरो दीपक प्राणों का थाल सजा लो।
हाथ उषा सी महँदी, माथे केसर बेंदी,
धीरे धीरे चरण महावर रँगे बढ़ा लो।
ब्याह तुम्हारा आज
नयन में चाह, बयन में लाज
एक हो जाना है री!
जग री सूतल नार पिया घर जाना है री!

रूप का संसार...



रूप का संसार है ये !
धूप का त्यौहार है ये !!

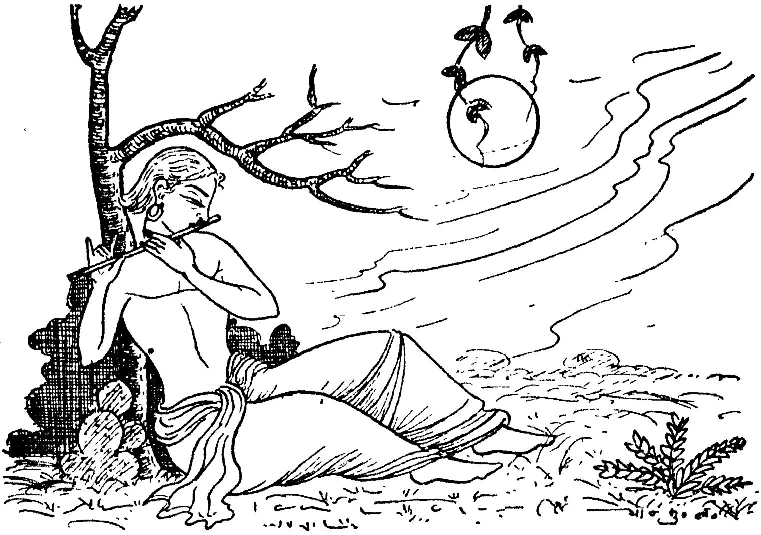
जब कली ने मुसकराकर भोर में निज द्वार खोला,
बेचती हो क्या जवानी गुनगुना कर भृंग बोला !
बाँह सी दो पाँखुरी तब कुछ लजाती सी खुली थीं,
पल्लवों ने ओट कर ली जब बिकी कोमल कली थी !
हँस पड़ी पतझार पीछे, फ़ूल में जो सो रही थी,
झर गई वह कांत काया, जो'सुरभि में खो रही थी !
कह रही है धूल रोकर प्यार की आधी कहानी,

डाल पर जो लुट गई थी फूल की उठती जवानी !
गीत गूँजा दूर से फिर, मौन मुखरित हो गया यूँ !
एक पल का प्यार है ये !
फिर सभी पतझार है ये !!

आँख ने देखा किसी को धड़कनों ने दी गवाही,
रूप, काजल बन गया जो, था इशारा प्राण का ही !
चाँद ने सूरत बना दी कोकिला ने बोल ढाले,
फूल से मुसकान लेकर रश्मियों ने रंग डाले !
बन गया जब चित्र पूरा दीप की लौ डगमगाई,
हो गया सब शून्य काला आँख भी उठने न पाई !
स्वप्न ने फिर याद पाली नैन ने मोती पिरोये,
प्राण ने साँसें सँजोई कल्पना ने पैर धोये !
ज़िन्दगी के झुटपटे में कह गया कोई पथिक यूँ !
प्रीत का दरबार है ये !
धार की तलवार है ये !!

गाँठ अंचल में लगी थी बँध गये दो उर अजाने,
रंग महँदी का हरा था, लाल कर देगा, न जाने !
ओठ पर धर ओठ भूले उम्र घटती जा रही है,
बाहुओं में ज़िन्दगी खुद ही सिमटती आ रही है !
एक दिन की साँझ ने सब रंग महँदी का चुराया,
एक काली रात ने सब आँख का काजल मिटाया !
देह ने सब कर्ज़ माटी का चुकाया धूल में मिल,
रह गई तस्वीर मन में, रह गई कुछ राख केवल !
देख महँदी और शोले आज भी मैं सोचता हूँ !
ब्याह का सिंगार है ये !
दाह का अँगार है ये !!

ओठ कलम के गीले हैं...



जब तक मन में आग तभी तक ओठ कलम के गीले हैं !

सूने प्राण लिये मुरली कितना संगीत लुटाती है।
घुँघरू के मन की पथरी झंकार मधुर बन जाती है।
मावस की विधवा अलकों से चाँद दूज का उलझ रहा,
ज्वाला जब सूरज की मुसकाती रोली घुल जाती है।
जो अभाव की गोद पले वे गीत कुमार सजीले हैं!
जब तक मन में आग तभी तक ओठ कलम के गीले हैं!

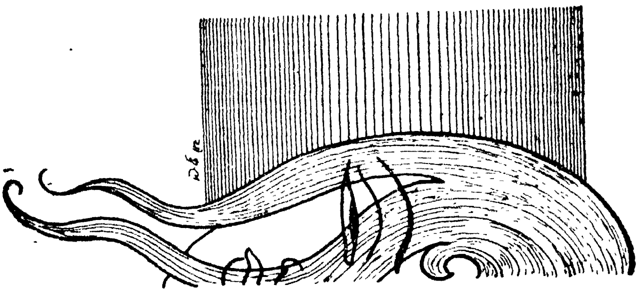
झूल झूल उठता है झूमर बज बज उठते हैं कंगन।
जाने क्यों बेचैन हो रहे अँगिया के रेशम बन्धन।
एक कमी भर गई माँग महँदी बन खिली हथेली में,
किसी मधुर सपने का पूरा मोल बनी बैठी दुल्हन।
अधर अछूते हैं यूँ ही तो प्रिय के मान हठीले हैं!
जब तक मन में आग तभी तक ओठ कलम के गीले हैं!

बुझे दिये से दूर देवता और दूर हैं परवाने।
जलते ओठ चूमने आते विना बुलाये दीवाने।
जीवन का ही नाम जलन है शवनम कलियों की भाषा,
अँगूरी छालों की दुनियाँ फूलों वाले क्या जाने।
रिस रिस जलता स्नेह प्राण का ज्योति भरे गर्वीले हैं!
जब तक मन में आग तभी तक ओठ कलम के गीले हैं!

दुआ दरद को दो वरदानी कभी न इसकी आँख लगे।
भीगे ओठ रहें घावों के अंगारों से जगे जगे।
पता नहीं कब पीर सिसक कर कड़ी गीत की बन जाए,
पता नहीं कब हृदय पहाड़ों का झरना बनकर उमगे।
आँसू की मादक मदिरा से ढलते गीत नशीले हैं!
जब तक मन में आग तभी तक ओठ कलम के गीले हैं!

आँखों में भर प्यास, अधर पर धर गीतों की ज्योति जली।
एक तुम्हारे लिए अदेखे छान रहा हूँ गली गली।
मिल जाते तो किसे खोजता इस दुनियाँ के मेले में,
रह जाती दुनियाँ अनदेखी बिना प्यार की बिना खिली।
तुम आँखों से दूर मुझे ये सारे चित्र रँगीले हैं!
जब तक मन में आग तभी तक ओठ कलम के गीले हैं!

प्यार भरा मन बुला रहा है...



आज दुबारा, प्राण ! तुम्हारा प्यार भरा मन बुला रहा है !
आ तो जाता पास तुम्हारे पर तन बन्धन लगा रहा है !

फूलों ने मुसकान चुरा ली
अँखियाँ छीन धरीं काजल ने !
पलकों के अनबींधे मोती
मोल ले लिये जमुना जल ने !
घेर रहीं घर की दीवारें
पवन पहरुआ जाग रहा है !
बहुत कहा मुझको भी ले चल
माना नहीं निठुर बादल ने !
दीपक मुझसे बोला, "मैं तो तेरे लिये जला निर्मोही !"
जिसने मन में बसा लिया वह दर्पण बन्धन लगा रहा है !

तारों ने लूटी है निंदिया
गीतों के घर बन्धक वाणी !
चलूँ जिधर भी लिपट चरण से
रो पड़ती ये मिट्टी रानी !
दरवाज़े पर खड़ी हुई जो
काँप रही डर से वियोग के !
उसी तरुण माधवी लता को
रोक रहा है अंचल धानी !
जिसके फूल कली तुतला कर पत्थर पैरों में जड़ देते !
जिसने गोद खिलाया है वह आँगन बन्धन लगा रहा है !

धूप कह रही, 'आ सोने के
पानी से तुझको नहलाऊँ !'
और चाँदनी कहती, 'तेरे
साथ सेज पर मैं सो जाऊँ !'
मेरा रोम रोम बाग़ी है
करता है अपनी मनमानी !
तुम मुझको इतना बतला दो
किससे रूठूं किसे मनाऊँ ?
मेरी चादर बुनने वाले इतने ढीले तार बुने क्यों ?
कदम कदम पर उलझ उलझ कर दामन बन्धन लगा रहा है !

जो न बँधी हो रेखाओं से
क्या ऐसी तस्वीर कहीं है ?
जिसे किनारे बाँध न पाये
क्या ऐसा भी नीर कहीं है ?

'बन्धन तो मन के होते हैं'
कहने वालो बुरा न मानो।
शायद अब तक कभी तुम्हारे
पाँव पड़ी ज़ंजीर नहीं है !
झूठी एक लकीर क्षितिज की सूरज अब तक जला न पाया !
एक अकेला जीवन मेरा, कण कण बन्धन लगा रहा है !

आज दुवारा, प्राण ! तुम्हारा प्यार भरा मन बुला रहा है।
आ तो जाता पास तुम्हारे
पर तन बन्धन लगा रहा है !

पूजा की कलियाँ कुम्हलाईं...



बहुत देर कर दी पाहन-मन पूजा की कलियाँ कुम्हलाईं ।

तिल तिल जल कर दीप बुझ गया ।
पलकों पर अँधियार झुक गया ।
भरी भरी थीं नयनाँजलियाँ,
रिस रिस सारा नीर चुक गया ।
बिन बरसे अब उड़ी जा रहीं,
सुख ने जो बदलियाँ बुलाईं ।
बहुत देर कर दी पाहन-मन पूजा की कलियाँ कुम्हलाईं ।

नींद सभी जागरण बना दी।
पंथ देखते दृष्टि गँवा दी।
ऋतुओं की छः डोरी वाले,
पलने पर ये उमर सुला दी।
नीड़ न सूना भी रह पाया,
बादल ने बिजलियाँ गिराई।
बहुत देर कर दी पाहन-मन पूजा की कलियाँ कुम्हलाईं।

किसको मन के दाग दिखाऊँ।
कैसे अनबुझ आग बुझाऊँ।
गाऊँ कौन आरती जिससे,
अपने सोये भाग्य जगाऊँ।
देख अकेला सदा सभी ने,
ताने दे उँगलियाँ उठाईं।
बहुत देर कर दी पाहन-मन पूजा की कलियाँ कुम्हलाईं।

चाँद मिला रजनी को प्यारा।
ऊषा को उदयाचल सारा।
तारों के मोती संध्या को,
धरती को मधु-सुरभि अपारा।
मुझको ऐसे अश्रु मिले जो,
शबनम की गलियाँ शरमाईं।
बहुत देर कर दी पाहन-मन पूजा की कलियाँ कुम्हलाईं।

हम अलमस्त दिवाने···



हम अलमस्त दिवाने,
आओ सैर करा दें मन की बस्ती उजड़े वीराने।

पिता सरीखी फैली सिर पर छाया नील गगन की।
धरती माँ की गोद सेज चम चम करते रजकण की।
पंथ हमारा सभी दिशा की माँग सजाने वाला,
अक्षय यौवन वाली प्रकृति-प्रिया पटरानी मन की।
अपनी धुन में मस्त घूमते हम अलबेले राही,
जीवन भर का साथ निभाने वाली लापरवाही।
आये प्यार लुटाने,
हमें बराबर पत्थर या मखमल का तकिया सिरहाने।
हम अलमस्त दिवाने!

नीचे दूब रेशमी ऊपर झिलमिल झिलमिल तारे।
गीली बालू पर पद-चिन्ह मिलेंगे नदी किनारे।
गाल चूम अलकें बिखरा कर दौड़ गई पुरवाई,
आँख-मिचौनी खेल रहे हैं लुक-छिप साँझ-सकारे।
महलों से ऊँचे तरुओं के नीचे रात बिताई,
छन छनकर सहमी सहमी सी पास चाँदनी आई।
चाँद लगा बहलाने,
जैसे कोई गोरा गोरा मुखड़ा आये बतियाने।
हम अलमस्त दिवाने!

धूल भरी पगडंडी हो या जनपथ हों रँगराते।
हम फिरते गीतों की मणियाँ गली गली बिखराते।
कोई गाली दे या प्यार करे इससे क्या लेना,
आज मिले कल दूर चले जायेंगे गाते गाते।
राजनीति, विज्ञान, ज्ञान, उपदेश, धर्म की बातें,
अपने लिये रहीं। जैसे अन्धों को काली रातें।
आये गीत सुनाने,
साँस साँस को छंद बना हर अधर अधर पर बिखराने।
हम अलमस्त दिवाने!

जहाँ कहीं मिल बैठे हम तुम जुड़ा वहीं पर मेला।
फूल बने दरबारी सिंहासन मिट्टी का ढेला।
आई मौज चल दिये उठकर भरी हुई महफ़िल से,
जैसे छोड़ अँगारों को उड़ जाये धुआँ अकेला।
समझ नहीं पाये जीवन भर अपना और पराया,
काँटों के सिर पर भी रक्तिम मंगल-तिलक लगाया।
देश-विदेश न जाने,
सबसे मन की गाँठ जुड़ी है लेकिन फिर भी बे-गाने।
हम अलमस्त दिवाने!

मौत हमें बीहड़ अँधियारे बन में रैन-बसेरा।
और जन्म भी ऐसे जैसे जोगी का सा फेरा।
सारी दुनियाँ बिना दिवारों वाला अपना आँगन,
क्षितिज बन गया बढ़ते बढ़ते दो बाँहों का घेरा।
तन फ़कीर का, मन राजा का, वाणी राग भरी है,
खुली पड़ी राहें सूरज की धूप बहुत निखरी है।
आई हवा बुलाने,
लो हम तो चल दिये समय की जलती लौ के परवाने।
हम अलमस्त दिवाने !

आजा निर्मोही···



तेरा सींचा आम बौर से लदा खड़ा आजा निर्मोही !

पहली बार फला फूला है
तेरा बोया बिरवा !
सर से उतरीं कितनी गरमी
बरखा, पछवा, पुरवा !
गोद भरी डालों की नन्हीं
नन्हीं अमियाँ झूलीं !

शहनाई ले भँवरों का दल मचल पड़ा आजा निर्मोही !

गंध, तुम्हारी सौगंधों सी
मुझको घेर रही है !
मेरे अरमानों सी पागल
कोयल टेर रही है !
झूमर सी हिलती हैं झुक झुक
झूम झूम मंजरियाँ !
मन में जागी याद, नयन में जल उमड़ा आजा निर्मोही !

पात पात में जाग उठी है
हरी भरी तरुणाई !
कोंपल कोंपल के अधरों पर
खेल रही अरुणाई !
तू आता तो मेरा तन-मन
भी ऐसा हो जाता !
अब तो केवल सपनों से सम्बन्ध जुड़ा आजा निर्मोही !

देख तनिक आकर अँकुर की
क्या तस्वीर हुई है !
अँसुअन सींची ऐसी ही अब
तरुणी पीर हुई है !
फलना इसके भाल लिखा था
जलना मेरे माथे !
दोष न तेरा, मेरा भाग्य स्वयं बिगड़ा आजा निर्मोही !

जीवन सूना सूना प्यारे···



जीवन सूना सूना प्यारे बिना तुम्हारे !

मेरे मन्दिर का अँधियारा !
हुआ नहीं अब तक उजियारा !
हाय ! अभागा प्राण-दीप ये,
पा न सका कुछ स्नेह तुम्हारा !
क्या होता है, रहें चमकते,
निशि-दिन, सूरज, चाँद, सितारे !
जीवन सूना सूना प्यारे बिना तुम्हारे !

कोरी कोरी उमर चदरिया !
रीती रीती प्रीत गगरिया !
बैरी सपने बहका बहका,
ले आये हैं कौन नगरिया !
आते ही बालापन खोया,
गाँठ लुटी यौवन के द्वारे !
जीवन सूना सूना प्यारे बिना तुम्हारे !

कोई मुझको राह दिखाओ !
या मेरा बचपन लौटाओ !
दर्पण टूटे इससे पहले,
केवल एक झलक दे जाओ !
अपना सारा कर्ज़ चुका लो,
बोलो कितने साँस उधारे !
जीवन सूना सूना प्यारे बिना तुम्हारे !

काजल आँसू ने धो डाला !
लुटी महावर फटा छाला !
गोरी गोरी कलियों वाली,
काली पड़ी धूप से माला !
रात सुहागन हुई सभी की,
उजड़े सब सिंगार हमारे !
जीवन सूना सूना प्यारे बिना तुम्हारे !

चन्दन बन जाऊँ...



जो तुम भाल लगा लो तो चन्दन बन जाऊँ !

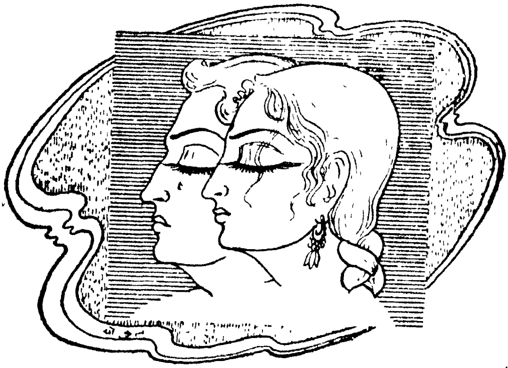
सारी उमर बिता दूँ साँपों की बाँहों में,
सुखा सुखा डालूँ शरीर शीतल दाहों में,
लेकिन जब तेरे पूजन की बेला आये
स्वयं मिटूँ, दे तुझे तिलक उमगा चाहों में !
अगर करो स्वीकार प्राण, अर्चन बन जाऊँ !
जो तुम भाल लगा लो तो चन्दन बन जाऊँ !

जाने कब से मेरी मुरली मौन पड़ी है,
स्वर गूंगे, रूठी सरगम मुँह फेर खड़ी है,
मन के वृन्दावन से रूठ गये मनमोहन
भीड़ भरी दुनियाँ मुझको उजड़ी उजड़ी है !
अधर अगर जूठे कर दो गुँजन बन जाऊँ !
जो तुम भाल लगा लो तो चन्दन बन जाऊँ !

बिकूँ भले बे-दाम छली इन बाज़ारों में,
जड़ा भले जाऊँ पत्थर की दीवारों में,
सब अपना सिंगार सजा मुझसे मुँह मोड़ें
गुमसुम देखूं सबको हँसता त्यौहारों में !
पर तुम एक झलक दो तो दर्पण बन जाऊँ !
जो तुम भाल लगा लो तो चन्दन बन जाऊँ !

पवन उड़ाता फिरे मुझे चाहे जीवन भर,
सूरज चाहे मेरी देह जलाये जी भर,
जैसे भी होगा सबकी ठोकर सह लूंगा
पर मेरे रूठे वरदानी दो इतना वर !
तुम जिस पंथ चलो उसका रजकण बन जाऊँ !
जो तुम भाल लगा लो तो चन्दन बन जाऊँ !

तन तुमको बेचा है···



तन तुमको बेचा है इसके अर्थ नहीं मन भी बेचा है।

बिकता है सिन्दूर हाट में
नहीं सुहाग बिका करता है।
वीणा चाहे जहाँ खरीदो
किन्तु न राग बिका करता है।
यदि सूनापन मिट जाता तो
नभ दे देता चाँद सितारे।
कलियाँ हों नीलाम, न उनका
गंध पराग बिका करता है।
हथकड़ियों सा बुरा लगेगा
या दमकेगी भरी कलाई।

यह तो भाग्य तुम्हारा मैंने तो केवल कंगन बेचा है।

सूर्य गरम है चाँद दग़ीला
तारों का संसार नहीं है।
जिस दिन चिता नहीं सुलगी
ऐसा कोई त्यौहार नहीं है।
जिसको भी देखा अंचल में
एक अभाव लिये बैठा है।
प्यार मिला तो रूप नहीं है
रूप मिला तो प्यार नहीं है।
चाहो तो जूड़े में गूँथो
या पत्थर पर पूज चढ़ा दो।
काँटे मेरी छाती में हैं तुमको खिला सुमन बेचा है।

जीवन क्या इतना भोला है
जो चाहोगे सो दे देगा।
रात रात भर चाँद रुला कर
दो मुट्ठी भर शबनम देगा।
जनमे साथ मिटे भी संग ही
मिले न पर बेचैन किनारे।
पास खड़ा जो पेड़, बहारों
में केवल दो फूल झरेगा।
अनसमझे मंत्रों पर वचन
भरे आओ उसका फल भोगें।
झुठलाया है चुम्बन लेकिन सच्चा गठ-बन्धन बेचा है।

पहले भी कोई सपना था
जिसे भुलाया आते आते।
एक सपन की करुण कहानी
छोड़ चलेंगे जाते जाते।

मरने से आगे भी कोई
मादक सा सपना ही होगा।
पता नहीं क्यों दुनियाँ वाले
उससे इतना हैं घबराते।
रंग भरी काया भी माटी
का सुन्दर सपना ही तो है।
जनम मरण की पलकों वाला तुमको यही सँपन बेचा है।

तन तुमको बेचा है इसके
अर्थ नहीं मन भी बेचा है।

शबनम का छाला कितना दर्द भरा...



मन का दर्पण का एक स्वभाव प्रिये,
हल्की सी चोट लगी बस टूट गया !
शबनम का छाला कितना दर्द भरा
कलियों को मुसकानों से फूट गया !

है एक आग ऐसी भी दुनियाँ में
जो जलती है पर धुआँ नहीं होता !
बादल कितना भी लगे रुई जैसा
लेकिन थोड़ा भी रुआँ नहीं होता !
मैं उसी आग को पाल रहा मन में
बादल सा खुश हूँ ढल ढल जीवन में !
पहले मुसकानों ने मुँह मोड़ लिया
धीरे धीरे आँसू भी रूठ गया !

तन अपना और आग भी अपनी है
यह होश नहीं रहता अंगारों को !
महँदी से रची हथेली की छाया
जादू बनकर रहती बेचारों को !
ऐसे भी हैं अपराध ज़माने में
सुख मिलता है जिनको दुहराने में !
दे पाया उसको कौन सज़ा बोलो
जो सपनों ही सपनों में लूट गया !

जो मचला कल मेले में जाने को
वह आज अकेला बैठा गुमसुम है !
जो कल गुड़िया का व्याह रचाती थी
अब उसके ही माथे पर कुँकुम है !
कल था जो आज नहीं है जीवन में
जो अब है वह न रहेगा दो दिन में !
सब कुछ ऐसे ही धुँधलाना जैसे
वह घुमरी खाता बचपन छूट गया !

जब रोम रोम में ग़म रम जाता है
तब प्राणों में संसार समाता है !
चांहे जिन पलकों से बरसें बूँदें
अंचल गीला अपना हो जाता है !
सब कहते ये मन की कमज़ोरी है
मैं कहता ये जीवन की डोरी है !
ऐसी भी कथा सुनो है सच होगी
मीरा के धान सँवरिया कूट गया !

मन का दर्पण का एक स्वभाव प्रिये,
हल्की सी चोट लगी बस टूट गया !
शबनम का छाला कितना दर्द भरा
कलियों की मुसकानों से फ़ूट गया !

आँसू की पहचान हुई···



मानव को दुनियाँ में आकर सबसे पहले
अपने जीवन में आँसू की पहचान हुई।

पहला मनुष्य इस बेहोशी के आलम को
प्रिय ! पहलीप हली प्रीत समझ पाया होगा।
उसने मन की इस मीठी मीठी पीड़ा को
बस कवि का पहला गीत समझ गाया होगा।
भावों को प्राणों में आकर सबसे पहले
मन में उठते तूफ़ानों की पहचान हुई।

चंचल लहरों का हाथ पकड़ मलयानिल ने
कह दिया कि आओ मेरे साथ किनारे पर।
यह आती जाती दुनियाँ है दीदार करो
पल भर को आओ बैठो शान्त कगारे पर।
लेकिन लहरों को तट पर आ सबसे पहले
इन पत्थर दिल चट्टानों की पहचान हुई।

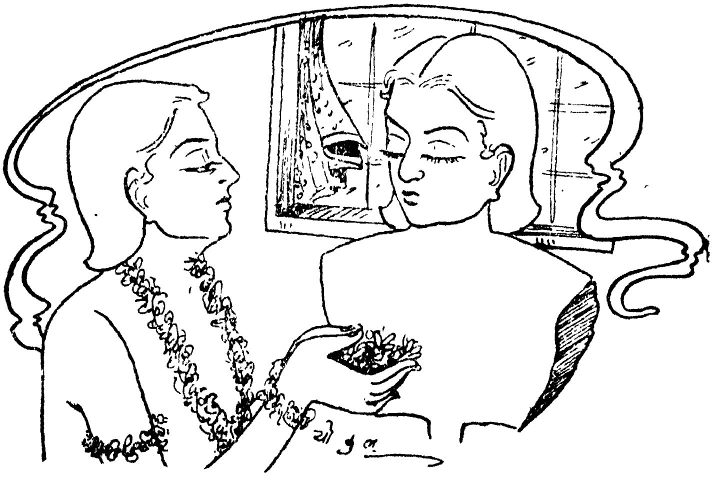
कलियों ने अपनी मस्त नशीली आँखों से
प्रणयामंत्रण दे दिया कि चुपके से आओ।
यह आज मिली है हमको, कल का पता नहीं
क्षणभंगुर जीवन में प्रिय, प्यार सिखा जाओ।
भँवरे को बगिया में आकर सबसे पहले
छाती में चुभने वालों की पहचान हुई।

नरमे सी नरम घास की छाती से लिपटे
ये पतले लंबे जीवन पथ भी क्या ही हैं।
लेकिन यह राज़ खुला सब चलने वालों पर
इनकी मिट्टी में मिले हजारों राही हैं।
पैरों को इस पथ पर आकर सबसे पहले
इन नोकीले पाषाणों की पहचान हुई।

बूँदें जब तक बादल की गोदी में रहतीं
बिजलियाँ उन्हें चुम्बन कर खेल खिलाती हैं।
क्या पता उन्हें धरती कितनी प्यासी कब से
अपने जलते कण कण में चिता जलाती है।
बूँदों को धरती पर आकर सबसे पहले
अणु के प्यासे अरमानों की पहचान हुई।

मानव को दुनियाँ में आकर सबसे पहले
अपने जीवन में आँसू की पहचान हुई।

मेरी पूजा हार गई तो···



मेरी पूजा हार गई तो मेरा इसमें क्या जायेगा !
लेकिन डर तो ये है दुनियाँ तुझको भी बदनाम करेगी !

तन के फूल प्राण की बाती
जगी जगी अँखियाँ सिन्दूरी !
तप तप कर हर ही लूंगा मैं
सूरज की सारी मजबूरी !
फिर भी अंधे आराधन पर दाग़ लगा तो सारी दुनियाँ !
लेकर मेरा नाम अधर से झुक झुक तुझे सलाम करेगी !

समय पिये जाता है जीवन
ग़म की गहरी अँधियारी है !
सौ सौ परवाने दीवाने
अबकी रात बहुत भारी है !
प्राणों के इस रतनदीप पर आँख लगाये लाख लुटेरे !
एक अकेली लौ जीवन भर किस किस से संग्राम करेगी !

जिसको किया प्रणाम उसी ने
याचक जान सदा मुँह फेरा !
मन की बात न बोल बन सकी
दृग की रात न बनी सबेरा !
पर अब ये मतवाली मीरा—पीर ज़हर के घूँट पिये है!
या तो मिट जायेगी या फिर कण कण को घनश्याम करेगी!

सपन जले, लुट गई जवानी
माटी मोल बिक गया कुंकुम !
प्रीत मिट गई, मीत छुट गये
उमर ढली पर मौन रहे तुम !
ओ अनबोले ! उस दिन भी क्या तेरे ओठ न खुल पायेंगे !
जब मेरी ज़िन्दगी मुझे ही गली गली नीलाम करेगी !

जिस पल तेरी याद सताये...



जिस पल तेरी याद सताये आधी रात नींद जग जाये !
ओ पाहन ! इतना बतला दे उस पल किसकी बाँह गहूँ मैं !

अपने अपने चाँद भुजाओं
में भर भर कर दुनियाँ सोये !
सारी सारी रात अकेला
मैं रोऊँ या शबनम रोये !
करवट में दहकें अंगारे, नभ से चंदा ताना मारे !
प्यासे अरमानों को मन में दाबे कैसे मौन रहूँ मैं !

गाऊँ कैसा गीत कि जिससे
तेरा पत्थर मन पिघलाऊँ !
जाऊँ किसके द्वार जहाँ मैं
अपना दुखिया मन बहलाऊँ !
गली गली डोलूँ बौराया, बैरिन हुई स्वयं की छाया !
मिला नहीं कोई भी ऐसा जिससे अपनी पीर कहूँ मैं !

टूट गया जिससे मन दर्पण
किस रूपा की नज़र लगी है !
घर घर में खिल रही चाँदनी
मेरे आँगन धूप जगी है !
सुधियाँ नागन सी लिपटी हैं आँसू आँसू में सिमटी हैं !
छोटे से जीवन में कितना दर्द-दाह अब और सहूँ मैं !

फटा पड़ रहा है मन मेरा
पिघली आग बही काया में !
अब न जिया जाता निर्मोही
ग़म की जलन भरी छाया में !
बिजली ने ज्यों फूल छुआ है, ऐसा मेरा हृदय हुआ है !
पता नहीं क्या क्या कहता हूँ अपने बस में आज न हूँ मैं !

मैं चलती फिरती एक बुराई हूँ···



मैं चलती फिरती एक बुराई हूँ,
बच कर रहना उजले दामन वालो !

तुम सभी देवता हो इंसान नहीं !
शबनम से सरल तरल पाषाण नहीं !
पत्थर तो मैं हूँ अब भी जीता हूँ,
जब जीने का कोई अरमान नहीं !

कोई दर्दीली याद सताती है !
मुझ पर बेहोशी छाई जाती है !
हैं गीत अधर पर केवल प्रीत भरे,
बचकर रहना पूजा अर्चन वालो !

मेरे मन में सपनों का दाह रहा !
जग फैलाता सौ सौ अफ़वाह रहा !
आदर्शों के धूपिया ज़माने में,
केवल मैं काजल की दरगाह रहा !
मत छुओ, तुम्हें कालिख लग जायेगी!
दुनिया तुम पर भी आँख उठायेगी !
मेरी तो परछाईं भी काली है,
बचकर रहना तुम गौर-वरन वालो !

मुझमें उद्दाम वासना भरी हुई !
केवल शृङ्गार साधना भरी हुई !
जिसने 'मंसूर' चढ़ाया सूली पर,
उस मदिरा की उपासना भरी हुई !
सब कहीं 'उमर ख़ैयाम' मिले मुझको!
ग़म में आवारा जाम मिले मुझको !
बहके हैं मेरे पाँव ज़िन्दगी भर,
बचकर रहना संयमित चरण वालो !

शारीरिक प्यास लिये हैं स्वर मेरे !
कीचड़ में सने हुए हैं कर मेरे !
मन ही मन में ये दुआ मनाता हूँ,
हो जायें एक हज़ार अधर मेरे !

जीवन सारा जड़ लिया गुनाहों से !
कितना बहका हूँ पूछो राहों से !
क्या करूँ मिली बदनाम जवानी है,
बचकर रहना पावन यौवन वालो !

गीता के श्लोक. न मुझको आते हैं !
वेदान्त समझ से आगे जाते हैं !
मैं मिट्टी का पुतला हूँ मुझको तो,
चमकीले खेल खिलौने भाते हैं !
आध्यात्म अलौकिक की पहचान नहीं!
अगले पिछले जीवन का ध्यान नहीं !
मुझको तो धरती का घेरा प्यारा,
बच कर रहना निर्गुण दर्शन वालो !

मैं चलती फिरती एक बुराई हूँ,
बचकर रहना उजले दामन वालो !

परिवर्तनीया...



सुख दुख की तुंग तरंगों पर
चढ़ता गिरता जीवन प्रतिपल !
बनतीं बुद्बुद सी आशायें
फेनिल जल हृत्तल पर अविकल !

पतझर तरुवर करते मर्मर
झरते निर्जीव पत्र झर झर !
फिर उग आते नूतन अभिनव
कोमल लालिम नूतन पल्लव !

आता सहास मधुमास बास
प्रस्फुटित सुमन सब सोल्लास !
लतिकायें यौवन से सभार
झुक जातीं सज्जित पुष्प हार !

कोमल कोमल लावण्य विमल
मुसकाते नव निर्मल शतदल !
फिर वही चिरंतन एक नियम
पतझर का फिर से पुनरागम !

दिनकर के पैने तिक्त तीर
सिखिदहन-सिक्त चलता समीर !
जल जाते तरु, वल्लरि, लतांत
फुँक जाती मेदिनि दवाक्रांत !

नीरस सर, सरि, सरवर, निर्झर
बह चलते तन से श्रम-सीकर !
फिर घिरते करते रोर शोर
ढक जाता अंबर ओर छोर !

श्यामल, भूरे, सित, पीत, सघन
करते गर्जन ये जग-जीवन !
नभ पर विद्युत की शुभ्र रेख
हृद में होता हर्षातिरेक !

झुक झुक भू पर फिर घहर घहर
मुक्ता सी बूंदें छहर छहर !
सलिलाप्लावित जल, थल, जंगम
जल, पावक का होता संगम !

शीतल हो जाती ग्रीष्म ज्वाल
क्रमशः आता फिर शिशिर काल !
तुहिनाच्छादित उत्सूर शीत
ले तुषार कण आती निशीथ !

हिम धूमिल पट में मौन स्तब्ध
है सुप्त प्रकृति निश्चल निशब्द !
है शाँत धूम्र से भरे कक्ष
जागृत प्रहरी से मौन वृक्ष !

अविरत ऋतुओं का आवर्तन
संसृति का पल पल परिवर्तन !
पल, विपल, यामिनी, याम शेष
करते अतीत मुख में प्रवेश !

नित रागरंग से अतिरंजित
ऊषा खिलती क्षण भर किंचित !
दिनकर के मंजुल किरण-जाल
हँसता प्राची में अरुण-बाल !

खग कोमल कलरव से गुँजित
तरु पत्र पत्र होता मुखरित !
सम्पूर्ण दिवस रवि श्राँत, क्लाँत
पश्चिम में फिर नित प्रति दिनाँत।

तिरती लाली फिर पुलिनों पर
चंचल तरंग का छल छल स्वर !
दिन भर की जर्जर थकित देह
ले उड़ जाते खग-गण सुगेह।

चंचल जल में पल पल अविकल
झलमल झलमल यह तारक-दल !
रम्योर्मि मध्य विधु प्रतिबिंबित
करता मनोज्ञ क्रीड़ा इंगित !

फेनोज्ज्वल सी ज्योत्स्ना निर्मल
आप्लावित जगती दुग्ध धवल !
झरते हिमकरण ज्यों रजत धूल
रजनी गंधा के विकच फूल !

अलसित अपलक दल सजल सजल
अध-नयन निमीलित कुमुद अचल !
मलयानिल की त्रिगुणी बयार
झङ्कृत कर देती सुप्त तार !

भ्रमरावलियों का मदिर गीत
सुन पड़ता मधुबन में सप्रीत !
सब मनभावन मनहर सुदृश्य
क्षण भर में हो जाते अदृश्य !

यह प्रकृति नटी का रम्य रूप
बनता मिटता रहता अनूप !
यह सृजन और विलयन कहता
जग परिवर्तित होता रहता !

सुख से दुख, दुख से सुख बनता
यह जग जीवन यूँ ही छनता !
यह काल चक्र का तीव्र चक्र
प्रतिपल परिवर्तित सरल वक्र !

उर में आशाओं का मेला
सुख दुख की जीवन में बेला !
आया जाया करतीं सदैव
संचालित करता एक देव !

ज्योतिर्मय घन बरसो···



उमड़ घुमड़ कर गरज गरज कर बरसो रे ज्योतिर्मय घन बरसो !
इधर खेत पर उधर रेत पर बरसो रे समदर्शी घन बरसो !

मुक्त हुआ क्षितिज द्वार
आओ सकरुण उदार !
भू बिषण्ण ग्रीष्म भार
बरसो शत सलिल धार !
प्यासा चातक किशोर
आशामय विकल मोर !

अपलक दृग गगन ओर
विस्मृत सुधि मन विभोर !
वीरुध तृण लता दीन
शीतल जल विलग मीन !
खिन्न तन मन मलीन
सरित काँति हीन क्षीण !
फहर फहर कर घहर घहर कर बरसो रे जीवनमय घन बरसो !
ज्योतिर्मय घन बरसो !
समदर्शी घन बरसो !

नील नभाँगन उदास
शिशु से तुम निरत लास !
क्रीड़ामय सरल हास
शोभित उन्नति विकास !
आतप विकराल काल
विस्तरित अंबु-जाल !
रोके रवि-कर-कराल
विहँसे जल कंज ताल !
नील, पीत, कृष्ण, श्याम
धरती-रति-नाथ काम !
ग्रीष्मानल के विराम
कर दो मध्यान्ह शाम !
झूम झूम कर घूम घूम कर बरसो रे यौवनमय घन बरसो !
ज्योतिर्मय घन बरसो !
समदर्शी घन बरसो !

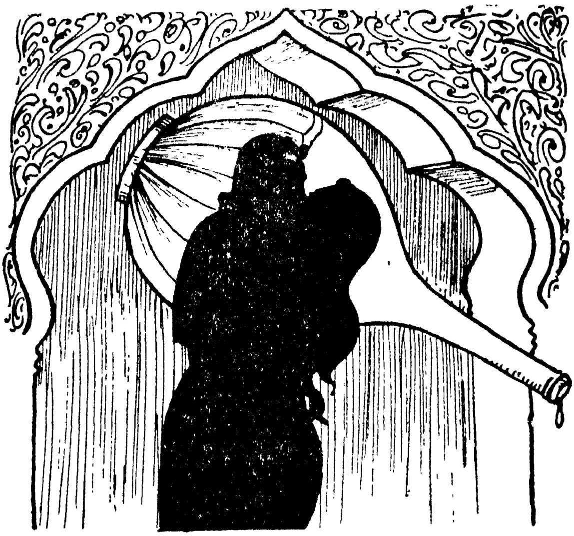
नीलम तन चित्र खचित
चंचल पर्यङ्क तड़ित !

सीपज उर कोष भरित
बरसो सुख धाम अमित !
दानी झुककर महान
तानो महिमा वितान !
रोको आतप विषाण
गूंजे कजली सुगान !
हरिताभाच्छादित भू
कोकिल की कूक कुहू !
पपिहे की पि···हू···पि···हू
राग रँगी अन्न-प्रसू !
ढुलक ढुलक कर पुलक पुलक कर बरसो रे कंचनमय घन बरसो !
ज्योतिर्मय घन बरसो !
समदर्शी घन बरसो !

तूल विरल ढेर सदृश
भूलों के फेर सदृश !
जलकण साकार सुयश
क्षर कर खर ग्रीष्म उमस !
प्रकटो भू के सुहाग
शोभित शिर चाप-पाग !
जगनिक के बीर राग
जागे भू-सुप्त-भाग !
भीगे चल पल्लव दल
बूंदें लघु फिसल फिसल !
शीतल भू वक्षस्थल
करे अमल निर्मल जल !
बिहँस विहँस कर रूठ रूठ कर बरसो रे क्रीड़ामय घन बरसो !
ज्योतिर्मय घन बरसो !
समदर्शी घन बरसो !

शैशव से चंचल गति
यौवन से अल्हड़ मति !
वृद्धों से त्यागी अति
संसृति के प्राण नियति !
फूलों के सरस हास
कूलों के लहर लास !
उपवन के मधु-विलास
जीवन शाश्वत प्रकाश !
झूले के स्वर मल्हार
प्रिय की स्मृति पुलक प्यार !
रजतिम झीनी फुहार
जग के यौवन उभार !
स्मर-शर-कर-धर, सिहर बिखर कर बरसो रे सावनमय घन बरसो !
ज्योतिर्मय घन बरसो !
समदर्शी घन बरसो !

पाप•••



न जन्म लेता अगर कहीं मैं, धरा बनी ये मसान होती,
न मंदिरों में मृदंग बजते, न मसजिदों में अज़ान होती।

लिये सुमिरनी डरे हुए से बुला रहे हैं मुझे पुजेरी,
जला रहे हैं पवित्र दीवे, न राह मेरी रहे अँधेरी।
हज़ार सिजदे करें नमाज़ी, न किन्तु मेरा जलाल घटता,
पनाह मेरी यही शिवाला, महान गिरजा सराय मेरी।
मुझे मिटाकर न धर्म रहता, न आरती में कपूर जलता,
न पर्व पर ये नहान होता, न ये बुतों की दुकान होती।

मुझे सुलाते रहे मसीहा, मुझे खिलाने रसूल आये,
कभी सुनी मोहनी मुरलिया, कभी अयोध्या बजे बधाये।
मुझे दुआ दो, बुला रहा हूँ हज़ार गौतम, हज़ार गाँधी,
बना दिये देवता अनेकों, मुझे मगर तुम न पूज पाये।
मुझे रुलाकर न सृष्टि हँसती, न सूर, तुलसी, कबीर आते,
न क्रॉस का ये निशान होता, न पाक-पावन कुरान होती।

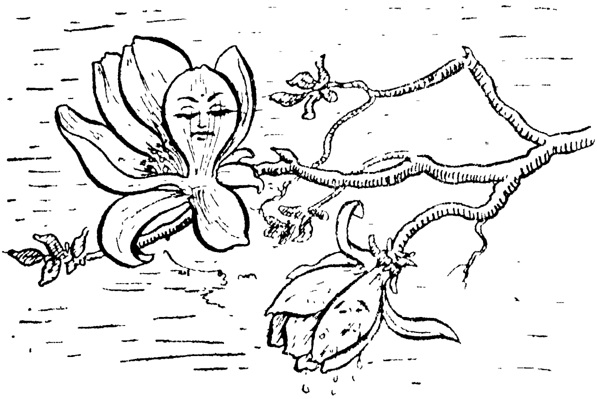
न वेद मुझसे बचे हुए हैं, न बाइबिल की रही कड़ी है,
पुराण, गीता, हदीस काँपे कभी ज़रा भी नज़र पड़ी है।
मुझे मिटाने हुए अनेकों पता नहीं गुम हुए कहाँ हैं,
अजेय मेरा निशान उड़ता बिना झुकी बुर्जियाँ खड़ी हैं।
न चूमता मैं अधर जनम के, सभी अधर फिर निशब्द होते,
न स्यात् ऐसा जहान होता, न स्यात् ऐसी ज़बान होती।

बुरा बता लें मुझे मौलवी, कि दें पुरोहित हज़ार गाली,
सभी चितेरे शक्ल बना लें बहुत भयानक, कुरूप, काली।
मगर यही जब मिलें अकेले सवाल पूछो यही कहेंगे,
'कि पाप ही ज़िन्दगी हमारी, वही ईद है वही दिवाली।'
न सींचता मैं अगर जड़ों को कभी जहाँ में न पुण्य फलता,
न देवता का मकान होता, न भक्ति, पूजा महान होती।

दिनेश सा मैं प्रकाश देता कि पुण्य-शशि में रहे जुन्हाई,
भले लड़े गालियाँ सुना ले, परन्तु रहता जुदा न भाई।
मिला मुझे कुछ स्वरूप ऐसा जिसे न ठुकरा सका ज़माना,
रही बढ़ी की बढ़ी पिपासा, अनेक मूरत गढ़ी बनाईं।
न प्राण की धड़कने बढ़ाता, न प्रीत हँसती, न गीत गाते,
न रूप का यूँ बखान होता, न प्यास इतनी जवान होती।

न जन्म लेता अगर कहीं मैं धरा बनी ये मसान होती,
न मन्दिरों में मृदंग बजते न मसजिदों में अज़ान होती।

बन-फूल...



मैं हूँ बन-फूल भला मेरा कैसा खिलना क्या मुरझाना,
मैं भी उनमें ही हूँ जिनका जैसा आना वैसा जाना।

सिर पर अंबर की छत नीली जिसकी सीमा का अंत नहीं,
मैं जहाँ उगा हूँ वहाँ कभी भूले से खिला वसंत नहीं।
ऐसा लगता है जैसे मैं ही एक अकेला आया हूँ,
मेरी कोई कामिनी नहीं मेरा कोई भी कंत नहीं।
बस आस-पास की गरम धूल उड़ मुझे गोद में लेती है,
है घेर रहा मुझको केवल सुनसान भयावह वीराना।
मैं हूँ बन-फूल भला मेरा कैसा खिलना क्या मुरझाना,
मैं भी उनमें ही हूँ जिनका जैसा आना वैसा जाना।

सूरज आया कुछ जला गया, चंदा आया कुछ रुला गया,
आँधी का झोंका, मरने की सीमा तक भूला भुला गया।
छः ऋतुओं में कोई भी तो मेरी न कभी होकर आई,
जब रात हुई सो गया यहीं जब भोर हुई कुलमुला गया।
मोती लेने वाले सब हैं आँसू का गाहक नहीं मिला,
जिनका कोई भी नहीं उन्हें सीखा न किसी ने अपनाना।

मैं हूँ बन-फूल भला मेरा कैसा खिलना क्या मुरझाना,
मैं भी उनमें ही हूँ जिनका जैसा आना वैसा जाना।

सुनता हूँ दूर कहीं मन्दिर, हैं पत्थर के भगवान जहाँ,
सब फूल गर्व अनुभव करते बन एक रात मेहमान वहाँ।
मेरा भी मन अकुलाता है उस मन्दिर का आँगन देखूँ,
बिन माँगे, जिसकी धूल परस, मिल जाते हैं वरदान जहाँ।
लेकिन जाऊँ भी तो कैसे कितनी मेरी मजबूरी है,
उड़ने को पंख नहीं मेरे सारा पथ दुर्गम अनजाना।

मैं हूँ बन-फूल भला मेरा कैसा खिलना क्या मुरझाना।
मैं भी उनमें ही हूँ जिनका जैसा आना वैसा जाना।

उस रोज़ इधर दूल्हा दुलहिन को लिये पालकी आई थी,
अनगिनती कलियों फूलों से जो अच्छी तरह सजाई थी।
मैं रहा सोचता गुमसुम ही ये भी हैं फूल और मैं भी,
सच कहता हूँ उस रात सिसकियों में ही भोर जगाई थी।
तन कहता मैं दुनियाँ में हूँ मन को होता विश्वास नहीं,
इसमें मेरा अपराध नहीं यदि मैं भी चाहूँ मुसकाना।

मैं हूँ बन-फूल भला मेरा कैसा खिलना क्या मुरझाना,
मैं भी उनमें ही हूँ जिनका जैसा आना वैसा जाना।

काली, रूखी, गदबदा बदन काँसे की पायल झमकाती,
सिर पर फूलों की डाली ले हर रोज़ सुबह मालिन आती।
ले गई हज़ारों हार निठुर पर मुझको अब तक नहीं छुआ,
मेरी दो पँखुरियों से ही क्या डलिया भारी हो जाती।
मैं मन को बहलाता कहकर, कल को ज़रूर ले जायेगी,
कोई पूरबला पाप उगा शायद यूँ ही हो कुम्हलाना।

मैं हूँ बन-फूल भला मेरा कैसा खिलना क्या मुरझाना,
मैं भी उनमें ही हूँ जिनका जैसा आना वैसा जाना।

पूजा में चढ़ना होता तो उगता माली की क्यारी में,
सुख सेज भाग्य में होती तो खिलता तेरी फुलवारी में।
इतने कुछ पुण्य नहीं मेरे जो हाथ बढ़ा दे खुद कोई,
ऐसे भी हैं जिनको जीना ही पड़ता है लाचारी में।
कुछ घड़ियाँ और बितानी हैं इस कठिन उपेक्षा में मुझको,
मैं खिला, पता किसको होगा झर जाऊँगा बे-पहचाना।

मैं हूँ बन-फूल भला मेरा कैसा खिलना क्या मुरझाना,
मैं भी उनमें ही हूँ जिसका जैसा आना वैसा जाना।



···और तभी जीवन के आधे पथ पर ऐसा दिन आया,
जब आँखों में रूप किसी का स्वयं दृष्टि बनकर छाया !
सावन की थी साँझ रंगीली भीग रही धरती धानी,
तुम फूलों में घूम रही थीं जैसे वर्षा की रानी !

खुली, घनी, काली, घुँघराली अलकें बिखरीं थीं कटि पर,
जैसे पिघल पिघल अँधियारा बहता सौ धारा बनकर !
नीले नयनों में जैसे सिमटी जग भर की उजियाली,
या मदिरा में घोल चाँदनी भर दी नीलम की प्याली !

जिधर पड़ गई दृष्टि उधर ही सौ सौ चाँद उभर आये,
कोमलता लुट गई कली की, फूलों के मन सकुचाये !
चंचल मधु-मुसकान थिरक उठती थी अधरों पर ऐसे,
लाल गुलाबों की गलियों में बचपन मचल रहा जैसे !

आँख-मिचौनी खेल रही थी उजले दसनों की माया,
जैसे बिजली का बालक ऊषा की गोदी में आया !
रचती थी मुसकान मधुर आवर्त्त कपोलों पर गहरे,
स्वर्ण झील में पास पास दो भँवर बनाती थीं लहरें !

मृदुल दुकूल सुनहरे तन पर सिमट सिमट लिपटा ऐसे,
कलियों की पीली केसर को पँखुरियाँ ढक लें जैसे !
हरी-भरी मखमली दूब पर धुले नील नभ के नीचे,
आँखों में डूबी आँखें, प्राणों से प्राण गए सींचे !

दर्शन के अंकुर में चुपके से परिचय के पात लगे,
परिचय के दो फूल मुसकराये चुम्बन में पगे पगे !
फिर मेरे 'मैं' तेरे 'तू' में कुछ भी अन्तर रहा नहीं,
जहाँ तुम्हारा मन पाया था अपनापन खो दिया वहीं !

बातों की रातें थीं दिन थे हँसती हुई बहारों के,
साँस साँस संदेश सुनाती थी मन के त्यौहारों के !
और एक दिन तुम प्राणों से दूर बिछड़कर चले गए,
दोष तुम्हें क्या दें ? हम तो अपने मन से ही छले गए !

उजड़ गई बगिया फूलों ने भी मुसकाना छोड़ दिया,
तुमने मुख मोड़ा तब से कोयल ने गाना छोड़ दिया !
पूनम तो हर बार खिली पर वैसी उजली नहीं खिली,
या तो शबनम ढली रात भर या बस मेरी आँख ढली !

दिया रात भर जलकर सोया, दिन भर जल सूरज सोया,
दर्द हठीला दिन भर सुलगा और रात भर ही रोया !
जिन अधरों को सींचा तुमने प्रिय चुम्बनी फुहारों से,
अब उन पर मरुथल सिमटे हैं जलते हुए अंगारों से !

नींद नयन में आती तो है पर आँसू बन झर जाती,
मेरी सूनी रातों को यूँ और अकेला कर जाती !
प्रीत न अपनी पीर कह सकी कभी किसी से भी रानी,
पत्थर रहते नहीं अगर आँसू को मिल जाती वाणी !

कभी इस तरह लगता है तुम अभी अभी ही आये हो,
देख उदास मुझे, मन भारी कर, आँखें भर लाये हो !
फिर जब कोई नहीं दीखता, मन मुझको समझाता है,
पगले यह दुनियाँ है इसमें परिचय भर का नाता है !

तुम जिनको अपना कह देते हो, वे सभी पराये हैं,
कुछ आये सामान सजाकर कुछ खरीदने आये हैं !
जिस पर तन मन लुटा दिया है वह मन की परछाईं है,
और मधुर भावना तुम्हारी उसे रूप दे आई है !

तुम अपने पर ही मोहित हो और नई यह बात नहीं,
रात, चाँद के बिना अधूरी होकर भी, क्या रात नहीं !
जीवन, एक प्रश्न, जिसका उत्तर अभाव कहलाता है,
और उसे पूरा करने का यत्न प्यार बन जाता है !

सुख, दुख, विरह, मिलन केवल संवेदन का हँसना, रोना,
जीवन, मरण मधुर सरगम का बजना, बज कर चुप होना !
सरिता के सिर पर पहाड़ है, पैरों में खारा सागर,
फिर भी हर प्यासे अधरों की भर देती खाली गागर !

नभ का घेरा गोल, प्रथम अन्तिम कोई भी सिरा नहीं,
कौन बचा जो धूप, धूल से इसके नीचे घिरा नहीं !
सुख दुख जिसके दो तट उस सरिता में नौका खेनी है,
जग संयोग, वियोग, योग की बहती हुई त्रिवेणी है !